## प्रकाशक की ओर से

इस पुस्तक के लेखक ठाकुर देशराज राजस्थान के प्रसिद्ध जनसेवक हैं। सन् १९५२ में वह भरतपुर की असेम्बली के लिए डिप्टी स्पीकर चुने गये थे और सन् १९४८ में राजस्व मन्त्री। जहां राजनीति में उनका दखल है, वहां समाज विज्ञान के भी वे एक अच्छे जानकार हैं। हिन्दी साहित्य के लिए उन्होंने 'जाट इतिहास' और 'सिख इतिहास' नाम के दो ग्रन्थ भेंट किए हैं।

'राजस्थान संदेश' और 'गणेश' पत्रों के सम्पादक रहकर भी राजस्थान में उन्होंने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। वास्तव में वे एक गुदड़ी के लाल हैं।

उन्हीं ठाकुर साहब की लेखनी का चमत्कार यह 'आर्थिक कहानियां' हैं, जो हिन्दी साहित्य में एक दम मौलिक हैं।

जहां तक भी हमारी जानकारी है हम यह भी कह सकते हैं कि 'अर्थशास्त्र' पर यह 'कहानी-पुस्तक' हिन्दी साहित्य में पहला प्रयत्न है।

आशा है हिन्दी हितैषी इसका समुचित आदर करने की कृपा करेंगे।



घाटियाँ बनाई जाने लगी हैं प्रमुख नगर और ग्रामों में हाट लगाने की आज्ञा जारी की गई है।,,

सुन्दरि ! आज तक लोग मौर्य सम्राट के गुन गाते हैं और तुम्हारी इस अवन्ति नगरी को पाटिलीपुत्र से जो राज-मार्ग जोड़ता है। यह भारत देश के व्यापार को फलने-फूलने के हेतु ही बनाया गया था।



# धन और उसका माध्यम
## (कौड़ियां)

यज्ञदत्त ने अपनी पत्नी से कहा, लड़का स्नातक है। कपिल ऋषि के आश्रम में उसने वेदों की सांगोपांग शिक्षा प्राप्त की है; किन्तु है वह निर्धन। उसके बाप के पास न तो अन्न का भन्डार है और न गायों का झुंड। मैं जानता हूँ कि-विद्वान की सर्वत्र पूजा होती है; किन्तु विद्वान भी जब किसी के सामने हाथ पसारता है तो उसकी आत्मा को बहुत कुछ संकुचित होना पड़ता है। दूसरे मैं यह भी पसन्द नहीं करता कि जानबूझ कर अपनी बेटी को ऐसे घर दूं जहाँ अन्न का भी अभाव हो। अन्न प्राण हैं और दूध अमृत। जिन लोगों को समय पर खाने के लिये अन्न नहीं मिलता और शक्ति बनाये रखने के लिये दूध प्राप्त नहीं होता। उनका सौंदर्य नष्ट हो जाता है। चेहरे की कान्ति मन्द पड़ जाती है। शरीर दुर्बल और कृष्ण वर्ण हो जाता है। सो मैं यह जानते हुए भी कि-ब्रह्मदत्त विद्वान हैं और विद्वान ब्राह्मण(ऋषिदत्त) का बेटा है, अपनी पुष्प सी कोमल बेटी महाश्वेता (ब्रह्मदत्त) को न दूंगा।

यज्ञदत्त अभी और कुछ कहना चाहते थे; किन्तु बीच में ही उनकी ब्राह्मणी ने धीमे, किन्तु दृढ़ स्वर में कहा, आर्यपुत्र! हम ब्राह्मण हैं, वैश्य नहीं, हमें यही देखना है कि वर विद्वान है। उसका चरित्र ऊँचा है। समाज हित की भावना से उसका हृदय ओत-प्रोत है। हाँ, यह सुनकर मुझे आश्चर्य है कि उसके पिता के पास गाय नहीं है। गौ और ब्राह्मण का

सरदार 'जावस्की' को काकेशश राजकुमारी 'केकवानू' के साथ शादी करने की धुन सवार हुई। जब साधारण बातचीत से काम नहीं चला तो उजबकों ने भेड़ों की खाल बेचने वाले व्यापारियों के वेश में काकेशिया में प्रवेश किया कुछ दिनों की कोशिशों के बाद वह केकवानू को उड़ाने में सफल होगये।

काकेशियन लोगों के लिये यह बड़े शर्म की बात थी कि कोई उनकी राजकुमारी को उड़ा ले जाय और वे शांति के साथ बैठे रहें। राजा का दरबार भरा और तमाम काकेश सरदारों ने तलवारों को ऊंचा उठाकर कसम खाई हम उजबकों को मिटाकर दम लेंगे।

उजबक लड़ाई में हार गये उन्होंने केकवान् वापिस करदी और अगली दो शताब्दियों के लिये काकेश लोगों के मातहत रहने को स्वीकार कर लिया। उजबक राज्य काकेश साम्राज्य का एक अधीन राज्य हो गया। उस पर अपना राजनैतिक प्रभुत्व और प्रभाव बनाये रखने के लिये काकेश लोगों ने अपना क्षत्रप मुकर्रिर कर दिया।

उजबक रमणियाँ सौन्दर्य में काकेश रमणियों से अवश्य घाटियाँ थीं किन्तु परिश्रम और गृह शिल्प में उनसे कहीं बहुत आगे थीं वे अपनी भेड़ों के ऊन को साफ सुथरा करके मुलायम बनाती। उसे रंगकर आकर्षक करती। तब उससे बटुये, चुटीले, बनियान, मोजे और गुलूबन्द तैयार करतीं। उनके मर्द पशुपालन खेती का काम करते। कुछ उनमें से कम्बल बनाते और ऊनी लबादे तैयार करते उनकी स्त्रियों और कारीगरों की बनी चीजें काकेश के बाजारों में बड़े चाव से खरीदी जाती। कुछ ही बर्षों में काकेशश का अपार धन उजबक देश में

साथ तो वृक्ष और जलाशय जैसा है। वही वृक्ष सघन और छाया वाला हो सकता है जो किसी जलाशय के किनारे हो। इसी प्रकार सेवात्री और सूक्ष्मवेत्ता भी वही व्यक्ति हो सकता है जो गौदूध और गौघृत का स्वयं पान करता हो और अग्निहोत्र द्वारा देवताओं को हवि देता हो। किन्तु वृक्षदत्त अभी गुरुकुल से स्नातक होकर निकला है तब तक हमें ही उसको एक दो गाय कन्या के साथ भेंट कर देनी चाहिएँ। गायें हमारे पास हैं; परन्तु सुनते हैं वृषभदत्त के पास अच्छी दुधार गाय हैं। एक गाय उसी के यहाँ से बदले में आप उसे सूत देकर ले आइये। मैंने उसे बड़े मनोयोग से काता है।

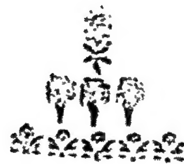
दूसरे दिन प्रात होते होते यज्ञदत्त वृषभदत्त के गौवाड़े में पहुँच गये और श्यामा नामक गाय के सिर पर हाथ फेरते हुए बोले हे गौभक्त ! मैं सूत देकर इस सुन्दर मुख वाली तरुण गाय को लेना चाहता हूँ। बोलो तुम कितना सूत लोगे। वृषभदत्त ने कहा ब्रह्मदेव ! मुझे इस समय सूत की आवश्यकता नहीं है हाँ तुम बीस गन्ड बड़ी कौड़ियाँ दो तो मैं तुम्हें इस गाय को दे सकता हूँ। यज्ञदत्त बड़े चकराये उन्होंने विस्मय के साथ पूछा गौभक्त ! क्या तुम्हारे जनपद में वस्तुओं का आदान-प्रदान वस्तुओं से नहीं होता है। हमारे कुरु जनपद में तो अन्न, गौ, घोड़े, भैंस, भेड़, बकरी, सूत और ऊन इनका एक दूसरे धन से आदान-प्रदान हो जाता है। अन्न के बदले में सूत और गाय आदि के बदले में अन्न देकर हम अपनी आवश्यक चीजों का परस्पर लेन-देन करते रहते हैं वृषभदत्त ने कहा, विप्रवर ! पहले हमारे शिवि जनपद में भी वस्तुओं का आदान-प्रदान होता था किन्तु चूँकि हमारी आवश्यकतायें

कहानी सुनाता हूँ। चम्पक देश के लोग कारीगरी में बड़े निपुण हैं। इनके देश की बनी कोकटी और अरण्डी चद्दरें तुम्हारे मालवे तक आती हैं। हम कह सकते हैं कि चम्पक देश की बराबर किसी भी देश में कपड़े तय्यार नहीं होते। उसी चम्पक देश के पड़ोस में काश्य देश है। बड़ा उन्नाऊ और रम्य। उस काश्य देश में अब से पचास वर्ष पहले देवशर्मा नाम का राजा राज्य करता था। एक दिन वह अपनी प्रिय रानी अनङ्गप्रभा के साथ नौका विहार के लिये गङ्गा में उतरा। एक सुन्दर नौका पर राजा और रानी सवार हुए। केवटों के यह पूछने पर कि श्री महाराजा किधर चलें? उन्होंने प्रवाह के साथ नौका को छोड़ने का हुक्म दिया। जिस द्रुत गति से भगवान भुवन भास्कर पश्चिम की ओर अपने सप्त वर्णि घोड़े वाले रथ को लेकर दौड़े चले जा रहे थे उसी भांति राजा सुशर्मा की नौका पूर्व की ओर शीघ्रता से बही चली जा रही थी। नौका की गति को उस वायुकोप ने और भी तेज कर दिया जो अभी अकस्मात उठ खड़ा हुआ था। महारानी अनङ्गप्रभा खतरे को सिर पर आते देख अपने प्रिय पति से चिपट कर बैठ गई। केवट और महाराज सुशर्मा दोनों ही नौका को बार बार डूबने से बचा रहे थे लेकिन हवा के जोरदार झोंकों से उठे हुए भँमर प्रतिवार नौका को उलटने की कोशिश कर रहे थे। सूर्यास्त से चन्द्रोदय तक लगभग ढाई पहर तूफान से युद्ध करते हुए नौका अचानक गङ्गा के बायें किनारे जा लगी। पास में ही एक छोटा सा गांव था। राजा सुशर्मा रानी का हाथ पकड़ कर नौका से उतरे और गांव की ओर चले। सामने के एक झोंपड़े में दीपक टिमटिमा रहा था और उसके मन्द प्रकाश में एक षोडशी युवती सामने बैठे

काफी वढ़ गई हैं और प्रति समय प्रत्येक वस्तु की साव किसी को आवश्यता नहीं होती इसलिये हमारे जनपद के प्रमुख नेताओं ने वस्तुओं की प्राप्ति के लिये धन का मध्यस्थ कौड़ियों को मान लिया है। हमें कोई भी वस्तु खरीदनी हो कौड़ियां देकर खरीद लाते हैं। चार कौड़ियां का हमने एक गन्ड मान रक्खा है। कौड़ियों के दो प्रकार हमने तय किये हैं छोटी और बड़ी। मैंने अपनी श्यामा गाय के बड़ी कौड़ियों के बीस गन्ड मांगे हैं अर्थात अस्सी बड़ी कौड़ियां। यज्ञदत्त ने जो बड़े मनोयोग से वृषभदत्त की बातों को सुन रहे थे शंकित भाव से कहा, गोपालक! कौड़ियां धन तो नहीं। धन तो अन्न और पशु ही हैं और हां कौड़ियां तो ऊन और सूत की भांति उपधन भी नहीं है। गौभक्त वृषभदत्त ने उत्तर में कहा ब्राह्मण मैं कब कहता हूँ कौड़ियां धन हैं। न मैं उन्हें उपधन मानता हूँ। वे केवल धन का माध्यम या बिचौलिया हैं। हमारे जनपद की पंचायत द्वारा उन्हें धन का मध्यस्थ स्वीकार कर लिया गया है हम उनके द्वारा अन्न-धन और गौ-धन सभी प्राप्त कर सकते हैं।

वृषभदत्त ने आगे कहा, इस रीति को सारे जनपद द्वारा स्वीकार कर लेने से हमें बहुत सी सहूलियतें पैदा हो गई हैं। हमारे जनपद के उत्तर में हींग पैदा होती है। उधर से हींग लाने वाले को इधर से नाज लाद कर ले जाना पड़ता था अब वह इधर से कौड़ियां ले जाता है। और उनसे नाज अपने ही इलाके अथवा गांव में खरीद लेता है। उत्पादन और व्यवसाय दोनों की ओर जो उदासीनता वस्तुओं के बदले वस्तु लेने के कारण पैदा होती जारही थी वह इस रीति के चलन से समाप्त हो गई है।

है और इसकी पैदावार भी आवश्यकता से अधिक होती है। किन्तु वह बारह महिने टिकाऊ नहीं होती बर्षात में सड़ जाती है। अतः चार महिने के लिये बिना सड़ने वाली प्याज यदि जापान भारत को देसके तो यहाँ उसका प्याज का व्यापार भी जम जाय। जापान पहुँचकर उस शिष्ट मंडल ने अपनी सरकार के सामने प्याज को बारह महिने तक टिकाऊ रहने वाली चीज बनाने का प्रस्ताव रक्खा। जापान सरकार के महकमा खेती ने वैज्ञानिक ढंग से अपने देश की प्याज को हर ऋतु के लिये टिकाऊ बना दिया है इसलिये उसकी माँग भारत में खूब है।



यज्ञदत्त को अब यह चिन्ता हो रही थी कि यदि वृषभदत्त ने गाय के बदले सूत न लिया तो न तो गाय मिली और न सूत का बोझा हलका हुआ। वृषभदत्त उसकी मनोव्यथा को समझ गया इसलिये उसने आश्वासन के ढंग में कहा, तपोधन ! घबराओ न, इस सूत को इसी ग्राम में बसने वाले कुवय (बुनकर) के पास ले जाओ वह तुम्हें इसके बदले में कौड़ियां दे देगा उनसे तुम गाय खरीद लेना।

× × × × ×

यज्ञदत्त जब गाय खरीदकर चलने लगे तो वृषभ ने कहा, दादा तुम्हारे जनपद में भी यह रीति होती तो तुमको ८०० क्रोश* सूत का बोझा लेकर न चलना पड़ता। वहीं के किसी बुनकर को सूत बेच आते और कौड़ियां आँट में लगा कर मेरे पास आजाते।

---

* शाम को जहां तक खड़ी गाय के सींगों की छाया पहुँचती उतनी दूरी को एक क्रोश कहते है।

जूनागढ़ के लोग उसे पगली के नाम से पुकारने लगे थे।

मण्डप में चन्दन खम्भे गाढ़े गये थे और कमल पुष्पों से उन्हें सजाया गया था। मोतियों का चौक पुराया गया था और रत्नजटित दो पटले कुशासन के स्थान पर रक्खे गये थे। नौलखा बाग के इन्द्रभवन में बरात को ठहराने का प्रबन्ध किया गया था और जनवासे से घर तक जो सड़क बना दी गई थी उस पर इत्र का छिड़काव लगाया गया था। इस तरह की धूम धाम और सजावट के साथ यह विवाह हो रहा था।

विवाह के अवसर पर लड़की के मामा का आना जरूरी होता है। वह भात पहनाता है सेठ मानक भाई के भी एक साला था। बड़ा धनी और महाजन। मानक भाई ने अपनी स्त्री अनुभूता से सलाह लेकर उसको फागुन सुदी एका-दशी के दिन भात लाने का निमन्त्रण भेज दिया।

नरसी मेहता धनी बाप का बेटा अवश्य था किन्तु वह समस्त ऐश्वर्य को छोड़कर संत होगया था। उसने सोचा मेरी बहिन और बहनोई के पास पैसे का घाटा नहीं है। मेरा भात सिर्फ यही है कि मैं वहां पहुँच जाऊँ। यदि ऐसे अवसर पर नहीं पहुँचा तो बहिन को दुःख होगा। इसलिए वह कुछ अन्य संतों को साथ लेकर और टूटे से गाड़ा में अपने पूजा पाठ और ओढ़ने बिछाने का सामान रखकर जूनागढ़ की ओर चल दिया।

बहिन ने देखा उसका भाई चन्द बैरागियों के साथ एक टूटी सी गाड़ी में उसके द्वार पर आया है वह जलभुन गई और उससे मिली भेंटी तक नहीं अपितु नौकरों से कह-कर नगर के बाहर एक खण्डहर मकान में उसे ठहरने की

## धन का माध्यम-धातु के टुकड़े

सतलज के वाम पार्श्व में बसने वाले मालव गण की राजकुमारी अमृतप्रभा अद्वितिय सुन्दरी थी। यह बात उन दिनों की कही जाती है जब कि भारत में सिकन्दर का कोई नाम तक नहीं जानता था। एक दिन जब कि समस्त प्रमुख मालव सरदार पड़ौसी जनपदों के साथ राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित करने के आधारों पर विचार कर रहे थे। अमितप्रभा ने संथागार (हाऊस आफ पार्लीमेंट) में प्रवेश किया। गणाधीश (संघपति) की एक मात्र दुलारी पुत्री का सभी प्रमुखों (सदस्यों) ने उठकर अभिवादन किया। अमितप्रभा किंचित मुस्कराई मानो कुन्द पुष्प खिले। फिर उसने कोकिला की जैसी मधुर वाणी में कहा, "मालव वीरों के सरदार की बेटी सिंहल द्वीप के मोतियों का हार, चीनी रेशम की साड़ी और शौरसेनी रत्न जटित कंचुकी चाहती है। बसन्त की सुहावनी ऋतु में हर मुल्क के सौदागर हमारी राजधानी शतद्रुपत्तन में आये हुए हैं। आशा है जनपदीय कोष में से इन चीजों को खरीदने की मेरे पिता और अपने सरदार को आप स्वीकृति देंगे"।

विशेष विचाराधीन प्रस्ताव के रूप में मालव प्रतिनिधियों ने कुमारी अमितप्रभा की इस मांग को स्वीकार कर लिया और दूसरे दिन दोपहर में सभी देशों के सौदागरों को संस्थागार के बाहरी खुले चौक में बुलाने का आदेश पौर समिति के अध्यक्ष (चेयरमैन आफ म्यूनिस्पल कमेटी) को देदिया गया।

# बैंक

कमला की माँ ने यों ही एक दिन हँसते-हँसते कहा था कमला तू पढ़कर 'बालिस्टर' नहीं होगी। किन्तु कमला को यह बात बर्छे की तरह चुभ गई और उसने प्रण कर लिया कि मैं 'बैरिस्टर' बनकर ही रहूँगी। माँ को मुझे यह दिखाना है कि उसकी बेटी कमला सचमुच बैरिस्टर हो गई है।

उसने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से एल० एल० बी० पास किया और वह वकील बन गई। अपनी तेज बुद्धि के कारण उसने अपनी प्रैक्टिस को इतना बढ़ा लिया कि मुवक्किलों से उसका घर भरा रहने लगा और नित नोटों का बंडल वह अपनी माँ के हाथ पर रखने लगी।

एक दिन कमला ने माँ से कहा- मैं कुछ दिनों के लिये विलायत जा रही हूँ। मुझे पासपोर्ट मिल गया है। तुम सुख से रहना और मुझे ज्यादा याद न करना। माँ सुन चुकी थी कि कमला विलायत जाकर बैरिस्टरी पास करेगी। उसे यह भी बता दिया गया था कि वकील से बैरिस्टर की फीस ज्यादा होती है। बैरिस्टर होकर कमला इतना धन पैदा करने लग जायगी कि घर की दीवारों को सोने से मढ़ा सकेगी। इस-लिये उसने कमला को जाने से रोका नहीं। हाँ, बूढ़ी सिकोड़ में उसकी आंखों से बड़ी बड़ी अश्रुबिन्दु अवश्य टपक पड़ीं।

कमला सिर्फ दो वर्ष विलायत में रही किन्तु इस बीच उसने कानून पढ़ने के सिवा अनेकों विलायत की अच्छी बातें

दूसरे दिन समय पर लगभग बारह देशों के सौदागर अपने अपने माल की गठरी और मंजूषायें लेकर मालवगण के सभा भवन में उपस्थित हुए। सैकड़ों मालव सरदारों और हजारों नागरिकों की अनुशासन बद्ध गोलाकार पंक्ति के बीच अपने सामानों की सभी ने प्रदर्शनी लगाई। कुमारी असितप्रभा की इच्छित वस्तुओं की खरीद के बाद अनेकों मालव सदस्यों और नागरिकों ने अपने अपने लिए हरेक सौदागर से कुछ न कुछ खरीदा; किन्तु एक कठिन समस्या खड़ी होगई तब जबकि सौदागरों ने अपनी अपनी वस्तुओं की कीमत वस्तुओं में अथवा कौड़ियों में लेने से इनकार कर दिया। अभी तक मालव गण अपने जनपद में अथवा पड़ोसी जनपदों में या तो चीजों से चीजों का बदला कर लेते थे बदला करने के अर्थ यह नहीं थे कि एक सेर घी के बदले में एक सेर ही अन्न दिया जाय। या पदार्थों (धन) का माध्यम कौड़ियां देकर चीजें ले लेते थे क्योंकि उनके मालव जनपद और पड़ौसी मद्र, शाल्व, शिवि, और वाहीक जनपदों में अभी तक पदार्थों का माध्यम कौड़ियां ही तय हो पाई थीं।

विभिन्न जनपदों के सौदागरों ने मालवों के सामने जो दलीलें अपने माल के बदले में कौड़ियां न लेने की रक्खीं वे यह थीं—

(१) हम सुदूर जनपदों के रहने वाले हैं।

(२) हमारे जनपदों में कौड़ियां सस्ती चीजों के खरीदने के काम में आती हैं।

(३) हमारी वस्तुएँ इतनी मंहगी हैं कि उनके बदले में लीगई कौड़ियों का उन वस्तुओं से कई गुना वजन होगा।

(४) हम आपके पड़ौसी जनपदों से ऐसी ही चीजों

# धन उपार्जन और शिक्षा

मृदुला ने अपने पति के पलङ्ग पर चादरे में पड़ी सल-वटों को ठीक करते हुए कहा, 'नाथ मैं चाहती हूँ दयाकृष्ण को राजा महेन्द्रप्रताप के प्रेम महाविद्यालय में शिक्षा पाने के लिये भेज दें। ठाकुर रोहणीरमणसिंह कुछ देर तो चुप रहे मानो कुछ सोच रहे हैं फिर बोले क्या इसीलिये न कि कल मथुरा की सभा में महात्मा गांधी ने यह कहा था कि 'शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जीवन निर्वाह के साधनों की प्राप्ति में सहायक हो। वह शिक्षा किसी काम की नहीं जो मनुष्य को परावलम्बी कामचोर और उत्साह हीन बनाती हो।' मृदुला ने जरा मुस्कराहट के साथ कहा, मालुम होता है आप अन्त-र्यामी हैं। मेरा खयाल कल के महात्माजी के भाषण को सुन-कर ही ऐसा बना है यह ठीक है किन्तु इससे भी पहले मैंने म्लेच्छ देश की एक रानी की कहानी सुनी थी। वह भी महात्मा गांधी जी के विचारों को सम्पुष्टि करती है। रोहणी ठाकुर ने कहा, अच्छा सुनाओ तो सही वह कहानी। मैं भी तो कुछ सोचूँ समझूँ।

मृदुला ने कहानी आरम्भ की—

इस भारत में वाहीकों का एक देश था। ब्राह्मणों ने इसका बहिष्कार कर रक्खा था। वे उसे 'म्लेच्छ देश' के नाम से पुकारते थे। उसी म्लेच्छ देश में रानी सुपर्णा का राज्य था।

की खरीद करेंगे जो वजन में कम और बहुत ज्यादा मान रखती हो।

( ५ ) अधिक कौड़ियां का इतने लम्बे सफर में लेजाना खर्चीला काम है।

कोई भी एक मार्ग न निकलता देखकर सौदागरों ने कर्पूर के बदले में केसर, कस्तूरी साड़ियों के बदले में पशमीना तलवारों के बदले में ताम्र और रत्नों की कीमत में सोना लेकर मालवों के हाथ अपना माल खपाया।

अमितप्रभा और उसी की तरह की अन्य नागरिक सुन्दरियां नयनाभिराम वस्तुयें पाकर अति प्रसन्न हुई किन्तु मालवगण के प्रमुखों के सामने सुदूर देशों के साथ व्यापार करने की अड़चन को सुलझाने का एक और नया प्रश्न उपस्थित हो गया। उन्हें भान हुआ कि कौड़ियां हल्की कीमत वाली चीजों का ही मध्यस्थ हो सकती हैं और अधिकतर वे स्थानीय व्यापार के ही काम आ सकती हैं। उनकी समिति ने कई दिन तक इस प्रश्न पर विचार किया। अन्त में तय किया गया कि "समस्त पड़ौसी जनपदों के मुखियों का एक सम्मेलन ऊँची कीमत वाले पदार्थों का माध्यम निश्चित करने के लिये बुलाया जाय। ताकि आपसी व्यापार औ सुदूर देशों के व्यापारियों की चीजों को खरीदने सम्बन्धी सामान की व्यवस्था हम लोग कर सकें। पड़ौसी जनपदों के प्रमुखों ने इस विचार का स्वागत किया और मद्रों की राजधानी शाकल नगरी में इस प्रकार के सम्मेलन को बुलाने का परामर्श दिया। मद्र स्वयं इस पक्ष में थे कि इस प्रकार का महत्व पूर्ण निर्णय उनकी उन्नतिशील नगरी में सम्पन्न हो।

× × × ×

# धन और उसके उपयोग

ठाकुर प्रभूसिंह की माँ मर गई थी। पंडितजी गरुड़ पुराण की कथा सुना रहे थे। स्वर्ग जाने की आकांक्षिणी बुढ़ियायें गर्दन हिला-हिलाकर पंडितजी को दाद दे रही थीं। पंडितजी कह रहे थे "एक कंजूस जब मरने लगा तो उसकी स्त्री ने कहा, आपके ऊपर गाय पुण्य करदें। कंजूस ने मना कर दिया किन्तु उसकी तकलीफ बराबर बढ़ रही थी। ब्राह्मणों ने गृहिणी को बताया तेरा कृपण पति सचमुच की गाय दान न करने देगा, तू सोने की प्रतिमा बनवाकर उस पर गोबर लपेट अपने पति से कह कि वह गोबर की गाय तो दान कर देने दो। तुम्हारे प्राण सुख से या तो निकल जायेंगे या रोग मुक्त हो जावोगे। गृहिणी ने ऐसा ही किया। कृपण पति ने गोबर की गाय दान करने की आज्ञा देदी। उसके प्राण सुख से निकल गये। जब उस कृपण का जीव वैतरणी के किनारे पहुँचा तो उसे वही गोबर की गऊ खड़ी मिली। वह उसकी पूंछ पकड़कर नदी को पार करने लगा। नदी की लहरों से टकराकर गोबर धुल गया और स्वर्ण की गाय कृपण की आँखों को दिखाई दी। उसने अपनी स्त्री को गालियाँ देते हुये दोनों हाथों से छाती ठोक डाली। पूंछ का छोड़ना था कि कृपण नदी में डूब गया। इसलिये दान में धोखा कभी नहीं करनी चाहिये"।

मेरी श्रीमतीजी, भी गरुड़ पुराण सुनने जाती थीं। उन्होंने रात्रि को सोते-सोते मुझसे कहा, बाबूजी, क्या यह

फसलें कट चुकी थीं। लड़के लड़कियां लोड़ी के त्यौहार को उमंगों के साथ मना रहे थे। ऐसे ही उल्लास पूर्ण वातावरण में शाकल नगरी में वाहीक, पारद, पल्लव, शिवि, मद्र, शाल्व, गंधार और कुरु लोगों के अर्थ-मन्त्रियों ने तय किया कि भारत के सुदूर जनपदों व राज्यों और भारत से बाहर के देशों के साथ व्यापार करने के लिये स्वर्ण, मध्य दर्जे की भारतीय चीजों के खरीदने के लिये चांदी तथा तांबे को मध्यस्थ बनाया जावे इन धातुओं के चौकोर अथवा गोल टुकड़े निश्चित तोलों के काट लिये जावें। कौड़ियां स्थानीय और हल्के दामों की वस्तुओं के लेन-देन का माध्यम रहें।

सम्मेलन से विदा होते हुये सभी जनपदों के प्रतिनिधियों के मुखों पर प्रसन्नता की झलक थी प्रत्येक जनपद की टकसाल में सोने, चांदी और तांबे के टुकड़े वस्तुओं के माध्यम बनने के लिये हजारों की संख्या में ढाल दिये गये।

× × × ×

कई सदियों के बाद पुरातत्व वेत्ताओं ने इतिहास की जानकारी के लिए कुछ स्थानों पर खुदाई कराई तो उन्होंने घोषित किया हमें कुछ ऐसे स्वर्ण और ताम्र के गोल और चौकोर टुकड़े मिले हैं जिन पर 'शिविजनपदस, और 'मालवानाम जय, लिखा हुआ है। इतिहास लेखकों ने बड़े उत्साह के साथ लिखा शिवि लोगों ने सिक्के चलाए थे जो उनके जनपद के नाम से मशहूर थे और मालव अपने सिक्कों पर अपनी विजय और गणवादिता का उल्लेख करते थे। किन्तु इस रहस्य का उद्घाटन आज से पौने तीन हजार वर्ष पूर्व हो चुका था जब कि शिवि जनपद के राजकुमार अमृताश्व ने अपनी नव परिणीता वधू मालव राजकुमारी अमितप्रभा

को सुहागरात के उपलक्ष्य में खिले वदन और मुस्कराते ओंठों से कहा था, "प्रियतमा ! यह लो प्रथम मिलन का उपहार, हमारे जनपद की प्रथम मुद्रा और इसके उत्तर में बड़े उत्साह से अपनी साड़ी के छोर से खोलकर वैसी ही एक स्वर्ण मुद्रा अमृताश्व को देते हुए अमितप्रभा ने कहा था और प्रियतम ! यह मालव पुत्री की भेंट है। राजकुमारी ने अपने प्रियतम की भेंट की हुई मुद्रा को पढ़ा "शिवि जन पदस,, और उसी समय अमृताश्व के मुँह से निकला "मालवा-नाम जय,,

वस्तुओं के आदान- प्रदान का माध्यम

# साम्राज्यशाही मुद्रा

परम पावनी भागीरथी छम-छम करती हुई गंग-भूमि की ओर जा रही थी और उधर से नील वर्ण जल धारिणी यमुना महारानी सूर्यपुत्री सर्व अभिमान को त्याग कर भागीरथी से मिलने के लिये त्वरित गति से समोद कदम उठा रही थी। यात्रियों को पंडा लोग गंगा-यमुना संगम की ओर यह कहते हुए ले जा रहे थे "त्रिवेणी का स्नान ही कलि-युग में हजार यज्ञों का फल दाता है,, । संगम पर पहुँचने वाले यात्री जब तीसरी नदी की बावत पूछते थे तो पंडा लोग यह कहकर उन्हें संतुष्ट कर देते थे ।श्री सरस्वती जी लुप्त होगई हैं,, । कार्तिकी पूर्णिमा का पर्व था इससे सभी घाटों पर भारी भीड़ थी । ऐसे ही समय में सर्व क्षत्रियों में अग्रणी यौधेयों का दल गंगा स्नान के लिये हरहर महादेव कहता हुआ उमड़ा जन भीड़ में भगदड़ मचगई ।

गंगा के उस पार गुप्तों के सेनापति हरिषेण का पड़ाव लगा हुआ था ।प्रथम स्नान की अभिलाषा लिये गुप्तों का सेनापति तीर्थ वासियों की पंक्ति के बीच खड़ा हुआ इस नई भीड़ को देख कर चकराया और उसने त्रिशूलधारी क्षपणक बेष सैनिक को इस नई भीड़ के समाचार लाने को पूर्व-पार भेजा ।

जब तक क्षपणक को लेकर नौका उस पार पहूँचे यौधेय बीर त्रिवेणी की मध्य धार में गोता लगा चुके थे । क्षपणक

योधेयों की नान्दी आकृति अंकित ध्वजा को देखकर लौट आया और उसने महासेना पति हरिषेण को सिर झुका कर कहा दंडनायक ! उस पार अभिमानी यौधेय स्नान कर रहे हैं पीछे एक सहस्र हाथी और पांच सहस्र घोड़े उन्हें चढ़ाने को तैयार खड़े हैं। हरिषेण हाथ मलकर रहगया। उसकी प्रथम स्नान की चिर-संचित अभिलाषा पर मानों वज्रपात होगया। टूटे दिल से वह शिविर में घुस गया। प्रयाग वासी उसकी उदासी का कारण समझ गये और अपने अपने घरों को लौट गये।

× × × × ×

ठीक पांच वर्ष बाद—

उसी घाट पर जहां यौधेय गणों ने स्नान किया था। गुप्त सेनापति हरिषेण स्नान कर रहा था। नाग, कर्कोटक, मौखरि शिवि और यौधेय पितरों को बिना तृप्त किये ही लौट जाने को थे क्योंकि पंडा लोगों ने दक्षिणा में उनकी मुद्राओं को लेने से इनकार कर दिया था। वे कहते थे अब प्रयाग स्वतन्त्र नहीं है यहां गुप्तों का साम्राज्य है कौशाम्बी के वत्स उनके अधीन हैं। यहां अब सिर्फ सम्राट समुद्र गुप्त और उनके पूर्वज गुप्त राजाओं की नामाङ्कित मुद्राएँ ही चलती हैं। मुद्रा के रूप में शिवि, यौधेय और नाग मुद्राओं की यहां कोई कीमत नहीं। हां, वे बाजार में धातु के रूप में बेची जा सकती हैं। पंडों की इस घोषणा को समस्त आगन्तुक दलों ने अपना अपमान समझा और वे पित्रों का श्राद्ध किये बिना ही गंगा में स्नान के निमित्त उतर पड़े। जाते जाते उन्होंने अपना अपमान करने वाले गुप्त सेनापति हरिषेण के शिविर को भी लूट लिया।

× × × × ×

महानगरी पटलीपुत्र में गुप्तों के परमप्रतापी सम्राट समुद्र गुप्त का दरबार लगा हुआ था। महासात्य ने निवेदन किया परम भागवत राजन! गया, प्रयाग, काशी और काम्पिल्प के ये पंडा लोग श्रीमान् की सेवा में यह आवेदन लेकर आये हैं कि 'जहाँ तक श्रीमानों का राज्य है, वहाँ ही तक श्रीमानों की मुद्रा का प्रचलन है। हमारे यहाँ बाहर के जो यात्री आते हैं उनके पास अपने जनपदों या राज्यों की की मुद्रा होती हैं। उन्हें हम दक्षिणा में लें तो कोई लाभ नहीं क्योंकि हमारे यहाँ श्रीमानों का राज्य होने के कारण दूसरे राज्यों की मुद्राओं का चलन वर्जित है, पंडा लोगों का आवेदन अभी पूरे रूप में सुनाया भी न जा सका था कि राजगृह, मथुरा चम्पा और अवन्ति के व्यवसाइयों का शिष्ट मंडल 'सम्राट की जय हो, का तुमुल घोष करते हुये दरबार में हाजिर हुआ। सम्राट ने पंडों की ओर मुख करके कहा, 'तीर्थवासियो मैं आपके अभिप्राय को समझ गया हूँ।, महामात्य ने वणिकों के शिष्ट-मंडल से अपना दुख कहने का संकेत किया। महामात्य के संकत को समझ कर अर्थवाहन नामक वणिक ने कहना आरम्भ किया—धर्मध्वज राजन! श्रीमानों की राज्य सीमाओं से बाहर के व्यापारी जब हमारे यहां माल खरीदने आते हैं तो उन्हें हमारे यहां से खाली हाथ लौटना पड़ता है क्योंकि उनके जनपदों और राज्यों की मुद्रायें यहां नहीं चलती हैं। हमारा व्यवसाय चौपट हो रहा है। कुछ जनपदों और राज्यों में जो श्रीमानों के प्रभाव से परे हैं प्रतिशोध में श्रीमानों की मुद्राओं का चलन अपने यहां वर्जित कर दिया है। इससे समस्त भारत में एक आर्थिक कठिनाई पैदा होगई है। हमारे जल पोत समुद्र और नदियों में लदे खड़े हैं।,,

सब कुछ सुन लेने के बाद महाराज समुद्र गुप्त ने अलग जाकर मंत्रियों के साथ कुछ परामर्श किया और वापिस आ सिंहासन पर विराज कर तीर्थ-पुरोहितों और वणिक लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा, "आप अपने अपने नगरों को जाइये हम शीघ्र ही एक विजय यात्रा आरम्भ करेंगे। जो जनपद और राज्य अभी साम्राज्य में नहीं हैं उन्हें हम जीतेंगे और जो देश हमारी साम्राज्य सीमाओं के बाहर होंगे उनसे हम उनकी और हमारी मुद्राओं के मान-परिमाण सम्बन्धी संधियां करेंगे। अधीनस्थ जनपदों की मुद्राओं का चलन प्रादेशिक एवं स्थानीय रहेगा। साम्राज्य के माल को वे अपनी ही मुद्राओं में खरीद सकेंगे; किन्तु सीमावर्ती चौकियों पर साम्राज्य के व्यापारियों को उनका भुगतान हमारी मुद्राओं में करने का हम प्रबंध कर देंगे। हमारी साम्राज्य मुद्राओं पर मेरे पूर्वज और अनुवर्ती सम्राटों का नाम परम भागवत की उपाधी के साथ अंकित रहेगा। चूंकि हमारे पास स्वर्णमुद्राओं की बहुतायत होनी चाहिए, इसके लिए हम कुशान, मौर्य, आदि पुराने राजवंशों की मुद्राओं का प्रयोग भी कुछ परिवर्तनों और नवीन संस्कारों के साथ करेंगे। अधीनस्थ राज्यों की टकसालें आयन्दा मुद्रा निर्माण का काम बन्द कर देंगी।,,

तीर्थवासियों और वणिक लोगों ने 'परमभागवत गुप्त सम्राट की जय, के उच्च घोष से महाराज समुद्र गुप्त की घोषणा पर प्रसन्नता प्रकट की।

दो ही वर्ष बाद—

समस्त जनपदों और राज्यों में जो शूर्पारक से लेकर ब्रह्म-पुत्र और हाटक देश (मानसरोवर) तथा सिंहलद्वीप तक गुप्त

जो साम्राज्य के अधीन थे समुद्रगुप्त सम्राट की घोषणा प्रसारित की गई—"देव पुत्र सम्राट समुद्र-गुप्त के शासन का यह बारहवां वर्ष है। प्रयाग के त्रिवेणी संगम पर माघ संक्रांति के दिन वे अपनी विजय यात्राओं का प्रसन्नता समारोह मनाने पहुँच रहे हैं। सभी साम्राज्य हितैषी जन नायकों, साधुओं, पंडितों और नागरिकों को वहां पहुँच कर उनकी प्रसन्नता में सहायक बनना चाहिए।,,

× × × × ×

इस वृहद् समारोह में शामिल होने वाले लोगों ने ऊँचे स्तम्भ पर पढ़ा "देव पुत्र परम भागवत महाराज समुद्र-गुप्त ने कामरूप; शूर्पारक, भोजक, कुन्तल, अन्धक, यौधेय आदि समस्त जनपदों और नवनाग, भद्रक आदि के राज्यों को जीत लिया है। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक समस्त देश पर उनका राज्य है।,,
यह काव्य मय प्रशस्ति हरिषेण ने लिखाई थी।

पदार्थों के आदान प्रदान का आधार

# ( माप तोल )

एक दम जिसका काला रंग है। असम दन्तावली है। और उलझी हुई जिसके शिर की जटायें हैं पैरों में जिसके बिवाई फटी हुई हैं ऐसे कुरूप शरीर वाले ब्राह्मण कौटिल्य के समीप ऊषा की प्रथम घड़ियों में दो गुप्तचर पाटलीपुत्र के प्रमुख नागरिकों और मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त की गत रात्रि की जीवन-चर्या की रिपोर्ट पेश करने आये हुये हैं आश्चर्य यह है कि उन दोनों में से एक दूसरे को कोई चीन्हता नहीं है इसलिये वे आपस में बात चीत करने के बजाय चुपचाप कौटिल्य के समाधि भंग की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

संध्यावन्दन से निवृत होने पर ऋषि कौटिल्य ने दोनों गुप्तचरों को अलग अलग बुलाकर बातें कीं और उनके चले जाने पर बड़बड़ाते हुये कहा मैंने चन्द्रगुप्त को बहुतेरा समझाया है। वह नहीं मानता, सेल्यूकस की यह लड़की हेलेना इसको पूरा व्यसनी बनाकर दम लेगी। रात्रि के पिछले पहर तक इसके विलास भवन में राग, रंग और मद्यपान की रंग रलियां चलती हैं। यह चन्द्र किस भांति इतने बड़े साम्राज्य का रंजन कर सकेगा। मैं निश्चय ही उसे बुलाकर आज डाटूंगा वह नहीं जानता नन्दों का इतना बड़ा साम्राज्य किन कारणों से नष्ट हुआ। वह या तो मेरे कहने के अनुकूल अपनी जीवन-चर्या बनायेगा नहीं तो मैं बजाय चन्द्रगुप्त के चन्द्रकेतु को इस महान पद पर अवस्थित करूंगा। पुरू लोग, मौर्य लोगों

से किसी बात में घटिया नहीं हैं। उत्तारी मालवों के अधीश्वर पौरुष का लड़का चन्द्रकेतु भी तो भारत को यूनानियों से मुक्त कराने और नन्द साम्राज्य को नष्ट करने में मेरा वैसा ही सहायक रहा है जैसा यह मौर्यकुमार चन्द्रगुप्त।

ऋषि कौटिल्य इस भांति बड़बड़ा ही रहे थे कि शहर कोतवाल दो झगड़ालुओं को पकड़े हुये कुटिया के सामने आ उपस्थित हुआ और बोला महामात्य ! यह धानक (धान बेचने वाला) है और यह दूसरा आदमी छीपी (रंगरेज) है धानक ने इस छीपी से अपनी भार्या की साड़ी छपाई थी। पारश्रमिक और रंगों के मूल्य स्वरूप इसने छीपी को बीस मुट्ठी धान देना मंजूर किया था। कल रात को यह छीपी इस धानक के पास धान लेने पहुँचा। धानक धान देता है अपनी मुट्ठियों से और छीपी धान मांगता है अपनी मुट्ठियों से। दोनों में इसी बात पर मार पीट भी हो चुकी है। इनके रात भर के झगड़े से पड़ौसी नागरिकों के आराम में बाधा पड़ी, इसलिये मैं इन्हें पकड़ लाया हूँ। नगर के न्यायाधीश ने इन्हें आप ही के सामने पेश करने की सलाह दी है क्योंकि उनका कहना है कि इस प्रकार—तोल माप—के पचासों झगड़े उनके पास नित्य आते हैं प्रश्न केवल इनके ही झगड़े का नहीं है किन्तु यह एक समस्या है जिसे सदा के लिये महामात्य ही हल कर सकते हैं। ऋषि कौटिल्य ने उन दोनों का फैसला यह कहकर कर दिया कि दस मुट्ठी धान धानक अपनी मुट्ठियों से दे दे और दस मुट्ठी धान छीपी अपनी मुट्ठियों से ले ले। दोनों वादी और प्रतिवादी महामात्य की जय मनाते हुये विदा हो गये। तब ऋषि कौटिल्य ने कोतवाल से कहा, नगर न्यायाधीश (सिटी मजिस्ट्रेट) से कहना चन्द्रगुप्त का अमात्य मंडल शीघ्र ही इस

समस्या को हल करेगा।

सातवें दिन—

मौर्य सम्राट का दरबार भरा अमात्यों के अलावा उसमें प्रान्तों के प्रबन्धक और विषयों ( जिलों ) के विषय पति भी उपस्थित थे। नियत समय पर साम्राज्ञी हेलना के साथ सम्राट चन्द्रगुप्त दरबार में पधारे।

कविजनों ने उनका वीरतापूर्ण छन्दों में गुणगान किया और अमात्यों तथा सेनापतियों ने अभिवादन। दरबार में कुछ अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्ति भी मौजूद थे। जिनमें यूनानियों का राजदूत मेगस्थनीज, चीनियों का एलची ताओहांग मुख्य थे। राष्ट्रोत्थान और उद्योग व्यवसाय विभाग के अमात्य चंदनक सेठ ने कहा मौर्य सरकार के सामने "पदार्थों के लेन-देन का आधार स्थायी रूप से तय करने का सवाल आज पेश है।" महामात्य ने इस प्रश्न को प्रस्तुत करने की मुझे राय दी है। तक्षशिला के प्रबन्धक (सूबेदार) ने निवेदन किया इस विषय में भोज देशों के प्रतिनिधियों से कुछ जानकारी मिलना जरूरी है क्योंकि उनके देशों में अब तक भी जबकि सारे साम्राज्य में भू कर और व्यवसाय कर मुद्राओं में प्राप्त किया जाता है समस्त कर भौज्य पदार्थों में वसूल होते हैं। वह अब तक पण और निस्क सिक्कों में अन्न, घृत, सूत आदि पड़ौसी जनपदों और राज्यों को देते हैं। तक्षसिला के प्रतिनिधि का यह कथन सब को भला लगा और सब कोई भोज देशों के प्रतिनिधियों के मुखों की ओर ताकने लगे। कुन्ती भोज ने महभोज और महाभोज ने उत्तम भोजकी ओर उत्तर देने के लिये आँखों ही आँखों संकेत किया उत्तम भोज ने खड़े होकर शिष्टता पूर्ण ढंगसे कहना आरम्भ किया:—आदर योग्य सम्राट और साम्राज्ञी ! अमात्य

गण और प्रतिनिधि बन्धुओ ! हमारे भोज देशों में पदार्थों के लेन-देन के लिये माप तौल नाप की जो रीति प्रचलित है वह बहुत पुरानी है कहा जाता है वह उस समय से चली आ रही है जब न कोई राजा था और न राज्य। न कोई दण्डी (दण्ड पाने वाला) था और न दाण्डिक (दण्ड देने वाला)। समाज की व्यवस्था ही सर्वोपरि कानून थी और सभी लोग परस्पर धर्म पूर्वक आपस में व्यवहार करते थे। हमारा विश्वास है माप तौल की वह रीति हमारे देशों से ही आर्यावर्त के अन्य प्रान्तों और जनपदों में फैली है। वह रीति यह है। अन्न धान और दालों की माप के लिये सबसे छोटा परिमाण (पैमाना) हमारे यहाँ मुट्ठी है। आजकल हमारे देशों में एक कौड़ी में पांच मुट्ठी अन्न, तीन मुट्ठी दाल, और दो मुट्ठी चावल आते हैं। चावलों से दाल बदलनी हो तो दो मुट्ठी चावल के बदले में तीन मुट्ठी दाल ले लेंगे। आपके ताँबे, चाँदी और सोने के सिक्के हमारे यहाँ के बहुमूल्य पदार्थ खरीदने के काम आते हैं और उनका मान हमने कौड़ियों में तय कर रक्खा है। ताम्बे के सिक्के की कीमत पाँच गण्ड कौड़ियाँ लगाते हैं। यह मूल्य निर्धारण हमने अभी बीस पचीस वर्षों के भीतर किया है। हाँ तो मैं कह रहा था अन्न और धान के लिये हमारे देशों की छोटी माप मुट्ठी है। मुट्ठियों से आगे के परिमाण बनते हैं। बीस मुट्ठी का तौला (मिट्टी का बर्तन) चार तौले का एक कलस और चार कलस का एक माँट या नाप होता है यह हमारे मिट्टी के बर्तनों से होने वाली माप है और पाँच माँट (नाप) की एक गौन होती है। गौन में भरकर गधों पर लादकर हमारे देश के लोग एक भाग से दूसरे भाग में अपने धान्य को ले जाते हैं, आगे बोलते हुये उत्तमभोज ने फिर कहा तरल

पदार्थों की तोल का हमारे देशों में सबसे छोटा माप अंजलि है। चार अंजलि का एक द्रोण चार द्रोण का एक शरवा चार शरवे की एक कुप्पीच आठ कुप्पीच का एक सागर और बीस सागर की एक ताम्रपात्री (तामड़ी) होती है। तरल पदार्थों को एक इलाके से दूसरे इलाके में ले जाने लिये हमारे देशों में ऊँट की आँतों के कुप्पे होते हैं जो ताम्र घड़ों (तमेड़ी) की शक्ल के होते हैं। इसमें घृत और तेल भरकर और ऊँटों पर लादकर हमारे देश के सौदागर व्यापार करते हैं। चीजों की लम्बाई चौड़ाई जानने के लिये हमारे देशों में अंगुल, मुष्ठ, हस्त, पाद, (डग) व्याम और पुरुष आदि पैमाने हैं चार अंगुल की एक मुष्ठी, छः मुष्टी का एक हस्त और जहाँ तक दोनों हाथ फैल जांय सीने समेत उतनी लम्बाई का एक व्याम तथा साढ़े तीन हाथ का एक पुरुष होता है।

उत्ताम भोज अपने भाषण को समाप्त करके अपने स्थान पर बैठ गये। दरबार में फिर कुछ घड़ियों के लिये सन्नाटा छागया। सब कोई एक दूसरे के मुंह की ओर झांकने लगे। तब सम्राट चन्द्रगुप्त ने अपने राजनैतिक गुरु और मौर्य साम्राज्य के प्रधान मन्त्री ऋषि चाणक्य को अपना अभिमत प्रकट करने को मन्द मुस्कराहट के साथ संकेत किया। मोटी ऊन के कम्बल को जिसे घुटनों में दबाये महामात्य ऋषि चाणक्य (कौटिल्य) बैठे हुए थे, संभालते हुए उठे। विदेशी राजदूतों ने जो साम्राज्ञी हेलना के साथ इधर उधर की बातें कर रहे थे अपने को संभाला और ध्यान के साथ ऋषि चाणक्य की बातों को सुनने के लिये एकाग्र चित्त हुए।

पवित्र देश के महान सम्राट, राजदूत गण और प्रतिनिधि बन्धुओ! आज समस्त भारत एक छत्र राज्य के रूप में है।

वह जनपदों की सर्वतन्त्र स्वतन्त्रता के कारण विभाजित नहीं है। उसका अपनी सीमाओं के बाहर के प्रभाव शाली देशों के साथ राजनैतिक और व्यापारिक सम्बन्ध कुछ तो कायम हो चुका है और बाकी होने वाला है। इसलिए जनपदों के आर्थिक रिवाजों के अधीन साम्राज्य की आर्थिक प्रणाली चालू नहीं हो सकती है। अब तो भारत में सर्वत्र वही राजनैतिक और आर्थिक प्रणालियां उपयोग में लाई जावेंगी जिन्हें पाटली-पुत्र की केन्द्रीय एवं सर्वोपरि मौर्य सरकार निश्चित करेगी।

हमसेपहले के भारतीय अर्थशास्त्री बृहस्पति, उशना आदि हैं। उन्होंने 'मापदण्ड, शब्द का प्रयोग अनेक बार किया है। मैंने यहां के चतुर काष्टी ( खाती, बढ़ई ) से एक 'मापदण्ड, बनवाया है। आप इसे देखें, इसके मध्य में तीन छिद्र हैं एक मध्य में दो, दोनों सिरों पर। मध्य के छिद्र में गौ पुच्छ की भांति एक झब्बेदार रस्सी बांधी हुई है। मैं इस झब्बे को पकड़ कर आपको यह बताना चाहता हूँ कि कि दण्ड के दोनों सिरे एक सीध में हैं। इसके अर्थ हैं यह दोनों ओर तोल में बराबर है। अब मैं एक बराबर स्वर्ण से बनाए हुए दो स्वर्ण द्वीपों जिनके किनारों में समान लंबाई पर छिद्र हैं और उन छिद्रों में रेशम धागे पिरोए हुए हैं-को इस 'मापदण्ड, के दोनों सिरों पर ( एक एक द्वीप ) बांधता हूँ। (बांध लेने के बाद,) ऋषि चाणक्य ने फिर कहा, आप देखते हैं इन द्वीपों के बंध जाने पर हमारा 'मापदण्ड, सीधा है यदि यह एक ओर से ऊपर को उठा हुआ होता और दूसरी ओर को झुका हुआ तो इसके अर्थ होते एक ओर का द्वीप भारी दूसरी ओर का हल्का है और दोनों को बराबर करने के लिये हल्के भाग की ओर कोई चीज उस परिमाण की बांध देते जो दोनों ओर का संतुलन कर देती है। इस संतुलन को पूरा

करने वाला पदार्थ इसका प्रसंग (पासंग) कहलाता। इन द्वीपों में कोई भी वस्तु भरकर माप दंड के मध्य में बंधे फन्दे को पकड़कर उठाइये। किस द्वीप में कम है किसमें अधिक अथवा दोनों में समान हैं यह हमारा माप दंड बता देगा। यह कह ऋषि चाणक्य ने सम्राट चन्द्रगुप्त के आगे उस 'संतुलन युक्त माप दण्ड, को रख दिया और कुछ गंभीर एवं दृढ़ आवाज में कहा 'जनता के लिये यह पदार्थ-तुला है और राजाओं के लिये न्याय-तुला,। इस प्रकार यह धर्म, अर्थ और न्याय का काँटा (तराजू) है।

ऋषि चाणक्य के इन शब्दों ने दरबार में हर्ष की लहर पदा कर दी। मेगस्थनीज ने कहा तोल के लिये मौर्य साम्राज्य का यह एक अद्भुत आविष्कार है और इसे मैं अपने पश्चिमी देशों में भी भेजूंगा!

ऋषि चाणक्य ने आगे कहना आरम्भ किया किन्तु इस समस्या का पूर्ण हल अभी शेष है उसे सुन लेने के पश्चात आपको और भी संतोष होगा। ( कंधे पर ओढ़े हुये पीत पट की गाँठ खोलकर एक लाल रंग की अत्यन्त छोटी चीज दिखाते हुये ) आप यह जो वस्तु मेरे हाथ से देख रहे हैं इसका नाम चिरमिटी है। यह हमारे जंगलों में पैदा होती है। यह परमात्मा का वैचित्र्य है कि यह प्राय हजारों दाने सम तोल के होते हैं। मैं इन्हें रत्ती नाम देता हूँ। यह हमारी सबसे छोटी माप है। जो स्वर्ण रत्न आदि तोलने के काम आयेगी ऐसी आठ रत्तियों का एक माशा बारह माशे का एक तोला पांच तोले का एक छटाँक सोलह छटाँक का एक सेर पाँच सेर की एक पंसेरी और आठ पंसेरी का एक मन होगा। अपने अपने जनपद की सहूलियत के अनुसार और भिन्न-भिन्न पदार्थों

की माप के लिये व्यवसायीगण इन्हीं रत्तियों से नीचे और ऊँचे के अन्य माप-परिमाण नियत कर सकते हैं।

भाषण के उपसंहार के रूप में ऋषि ने कहा हम अपनी ताम्र, रजत और स्वर्ण मुद्राओं की तोल इन्हीं रत्तियों से निश्चित करेंगे और इससे पहले हमें उनके मूल्य भी नियत करने होंगे। लम्बाई चौड़ाई नापने के जो परिमाण हमारे यहाँ अंगुल, मुष्टी, हस्त और पाद निश्चित हैं उन्हें भी हम समान रूप देने के लिये निश्चित किये लेते हैं। चार अंगुल का एक गिरह (ग्रह) और सोलह गिरह का एक गज (ग्रहज) होगा। आप मेरे सामने पड़े हुये इस माप दण्ड को देख रहे हैं यह एक गज (ग्रहज) है। इसमें एक-एक ग्रह में (चार-चार अंगुल के अन्तर पर) रेखा चिन्ह अंकित हैं और लम्बाई में यह दण्ड सोलह ग्रह है।

ऋषि चाणक्य के भाषण के समाप्त होने पर दरबार मौर्य सम्राट की जय के घोषों से गूँज उठा।

इस दरबार की समाप्ति के दूसरे दिन पाटिलपुत्र की पौर सभा (म्यूनिसिपलटी) के विशाल मैदान में एक ऊँचे मंच पर ऋषि चाणक्य द्वारा आविष्कृत मापदण्ड तराजू, गज और बटखरे (बाँट) रक्खे हुये थे और जनता की भीड़ उन्हें देख देखकर महाराजा चन्द्रगुप्त और उनके महा बुद्धिमान प्रधान मन्त्री ऋषि कौटिल्य (चाणक्य) की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रही थी।

एक महिने बाद—

पाटिलपुत्र के बाजारों में छोटी बड़ी और मध्य परिमाण की तौलों को तोलने के लिये हजारों तराजू बिक रही थीं। किसी में लोहे की डंडी लोहे की जंजीरों की जोती और लोहे

केही पलड़े थे और किसी में काठ की डंडी अरहर झाऊ और बांस की खप्पचों के पलड़े तथा सन या सूत की जोती थीं। सोना चांदी और जवाहरात तोलने के लिये पीतल, चांदी स्वर्ण और रेशम से बनी तुलायें बाजार में लाई गई थी कुछ कारीगरों ने बाँट भी निर्माण किये थे जो यत्र-तत्र बाजार में बिकते दिखाई देते थे।

---

धन उपार्जन का साधन

# व्यापार

प्रभावती के पति धनदत्त जब विदेश से लौटे तो उनका गला रंग विरंगे हीरे मोतियों और दूसरे जवाहराती हारों से भरा हुआ था। पगड़ी के पेचों में भी जवाहरात टंके हुए थे। हाथों में स्वर्ण के कड़े थे और कमर में रत्न जडित कौंधनी। माता ने थाल सजाया, पत्नी ने दीप संजोये और भगिनी ने आरता किया। वन्धु वान्धवों की पचासो कुल वधुओं ने मंगल गान गाते हुए उन्हें घर के भीतर लिया। सब को पता था सोने रूपे से भरा हुआ उनका जहाज प्रसिद्ध नगरी मायापत्तन के पास वहने वाली प्रसिद्ध नदी सिन्ध में लंगर डाले पड़ा है। इसलिए सब कोई उन्हें आदर की दृष्टि से देख रहे थे और उनकी सफलता पर उन्हें वधाई अर्पित कर रहे थे। मिलने जुलने वालों का दिन भर तांता रहा। धनदत्त सभी के साथ प्रेम से मिले और छोटे छोटे चुटकलों में अपने प्रवास काल की वातें सुनाकर लोगों का मनोरंजन करते रहे। संध्या हुई। मायापत्तन नगरी दीप-सिखाओं से जगमगा उठी। मां ने भोजन परोसा, वहिन ने पंखा संभाला और हंसते हुए चेहरे को लेकर धनदत्त खाने बैठे। उधर उमंग भरे दिल से पत्नी एक हवादार कमरे में सेज सजाने की तयारी में लगी। मां को वहुत कुछ पूछना था वहिन भी न मालूम क्या क्या जानने की जिज्ञासा लिये हुए थी; किन्तु उन्हें प्रभावती का भी ध्यान था जिसकी अब

तक धनदत्त के साथ एक भी बात नहीं हुई थी। मां बेटी तो हजार लोगों के धनदत्त के पास आते जाते रहने की दशा में भी उसके आस पास ही रही थीं, इसलिए मां ने प्रेम भरे स्वर में कहा, बेटे जाओ, सोओ क्योंकि तुम यात्रा के थके हुए हो। धनदत्त शयनागार में चले गये।

प्रभावती के जीवन में पांच वर्ष के बाद आज की रात इतनी मधुर थी जितनी कि सुहागरात भी नहीं थी क्योंकि सुहागरात में झिझक और संकोच हृदय की उमंगों को दबाये हुए थे आज की रात में आनन्द और मधुरता तो सुहागरात ही जैसे थे किन्तु खुली हुई उमंगें विशेष थीं।

रात्रि का पिछला पहर था कि पड़ोस के झोंपड़े में से एक चीख सुनाई दी। धनदत्त ने कहा, प्रिये! यह किसका रोदन है। प्रभावती बोली प्रियतम! यह अन्ता लकड़हारे की स्त्री है। उसका पति बीमार है। जब हालत खराब होजाती है तो उसकी स्त्री दुविधा रो उठती है। धनदत्त ने कहा अहा मैं पांच वर्ष में सोने चांदी से जहाज भरकर लाया हूँ और इस अन्ता से अपना मकान भी न बन सका। जिस झोंपड़े में इसे मैं पांच वर्ष पहले छोड़ गया था, वहीं झोंपड़ा आज भी है। प्रभावती ने कोकिला जैसी मीठी वाणी में कहा, नाथ! यह मजदूर हैं। लक्ष्मी व्यापार में वास करती है। आपने व्यापार किया है इसलिए लक्ष्मी को पाया है। धनदत्त ने बड़े तपाक से कहा, नहीं मैंने अपने भाग्य से लक्ष्मी को पाया है। प्रभावती समझ गई कि मेरे पति को धन का उन्माद होगया है इसलिए उसने नम्रता से कहा, संभव है देव! आपका कहना सच हो; लेकिन मैं इस आर्ष वचन में विश्वास करती हूँ "व्यापारे वसति लक्ष्मी,,। अपनी बात को कटती देखकर

धनदत्त श्रेष्ठि को क्रोध आगया और उन्होंने अपने गले के जवाहरात उतार कर प्रभावती को देते हुए कहा, ओ, हठी स्त्री जा, इन रत्नमालाओं को अन्ता को व्यापार करने के लिये दे आ, मैं भी देखता हूँ कि उसका दुर्भाग्य उसे कङ्गाल ही रखता है या वह इनसे व्यापार करके लक्ष्मी-पति बनता है। प्रभावती व्यवसायी की बेटी थी और वह व्यापार के बहुत से सिद्धांत और साधनों के विषय में अनुभव रखती थी इसलिये उसने दृढ़ता के स्वर में कहा, स्वामिन ! व्यापार तो मिट्टी के ढेले से भी आरम्भ किया जासकता है बशर्ते व्यापार करने वाला लग्नशील, मिहनती और सूक्ष्म बूझ का आदमी हो। धनदत्त अब तक और भी गर्म हो चुके थे और उन्होंने व्यङ्ग के रूप में कहा, मैं तुम्हें अन्ता के घर आने जाने और सलाह देने की छूट देता हूँ और चाहो तो कतई तौर पर तुम अन्ता के घर दो चार साल रहकर व्यापार कर सकती हो, मैं भी देखूँ "अन्ता किस प्रकार धनपति बनता है जिसके कि भाग्य में आजीवन दरिद्रता उसकी जन्म कुण्डली बनाने वालों ज्योतिषियों ने लिख रक्खी है।,,

× × × × ×

दुविधा अपने रुग्ण पति की खाट के पास बैठी हुई आंसू बहा रही थी कि उसने छम-छम की आवाज सुनी बाहर आकर जो देखा तो वह सेठानी प्रभावती को देखकर, आश्चर्य चकित रह गई। वह कुछ बोले कि-प्रभावती ने कहा: हमें सिंधु नद के किनारे की सतहों के ऊपर की मिट्टी चाहिये। तुम जाकर लाओ। तब तक मैं तुम्हारे बीमार पति की देख भाल करूंगी। मिट्टी के तुम्हें पैसे मिलेंगे। दुविधा टोकरी उठाकर चलदी। प्रभावती ने रोगी को देखा, उसे तसल्ली दी

और कहा, तुम जल्दी ही अच्छे हो जावोगे और चार-पाँच साल में धनी बन जाओगे; किन्तु तुम्हें मेरे आदेश पर चलना होगा।

समय पर दवा दारू होने और खाने को उचित पदार्थ जिन्हें कि वैद्य लोग बताते थे मिलते रहने से पन्द्रह बीस दिन में अन्ता स्वस्थ होगया। अब उसने प्रभावती से कहा, सेठानी बहिन! इन दिनों तुमने नित एक एक पहर रहकर मेरी जो देख-भाल की है और मेरी पत्नी से मिट्टी खरीद कर हमें भूखों मरने से बचाया है उसके लिये हम जीवन भर तुम्हारे कृतज्ञ रहेंगे। प्रभावती ने कहा, दादा! अन्तराम मुझे तुम्हारी कृतज्ञता की आवश्यकता नहीं, मुझे तो यह वचन दो कि अगले पांच सात वर्ष तक तुम मेरी सलाह के अनुसार काम करते रहोगे। दोनों स्त्री पुरुष ने सूर्य की ओर हाथ उठाकर कहा, भगवान भास्कर हमारे साक्षी हैं; हम जीवन भर बहिन प्रभावती के अनुशासन में रहेंगे।

मायापत्तन के ईशानकोण स्थिति एक विशाल भवन में 'शैव कला, का उद्‌घाटनोत्सव बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया जारहा था। नगर के समस्त नागरिक उस 'शैव कला, भवन की ओर उमड़े चले जा रहे थे। जो इस उत्सव के सम्बन्ध में अनभिज्ञ थे, उन्हें विज्ञ लोग समझा रहे थे "मिट्टी के व्यापारी ने इस भवन को बनवाया है। उसने आज तक मिट्टी से जितनी वस्तुओं का निर्माण कराया है उन सब के नमूने इस कला-भवन में देखने को मिलेंगे,, सेठ धनदत्त भी अपनी पत्नी प्रभावती को लिये रथ में बैठकर इस कला-भवन को देखने जा रहे थे। वे और लोगों की अपेक्षा अधिक प्रसन्न थे क्योंकि-जनपद के अध्यक्ष और दूसरे बड़े-बड़े नागरिकों के

होते हुए भी 'उद्घाटन, की रस्म उनकी पत्नी प्रभावती द्वारा सम्पन्न कराई जा जारही थी।

नियत समय पर ईशानदेव के स्तोत्र गान के पश्चात् देवी प्रभावती ने कला-भवन के फाटक पर लगे ताले को खोला और उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा, "परम शैव बान्धवो! ईशान की कृपा से आज हम ऐसे कला-भवन का निर्माण अपने यहां देख रहे हैं जो समस्त आर्यवर्त में अद्वितिय है। आप और हम न रहेंगे और संभव है एक दिन हमारी महान् और समृद्धि पूर्ण नगरी मायादत्तान भी भू-गर्भ में समा जाय और यह भी संभव हो सकता है कि आगे आने वाली सहस्राब्दियों के बाद की पीढ़ियां हमारी इस नगरी का नाम तक भूल जांय और इसके महान् टीलों को मुर्दों के ढेरी ( मोहञ्जोदडे ) कहने लगे; किन्तु जब जब इस कला-भवन के निर्माता द्वारा बनाई गई वस्तुएँ पानी के प्रवाहों से अथवा खुदाई से खुद कर पाई जावेंगी लोग उन टीलों के नीचे किसी समृद्ध नगर की कल्पना अवश्य ही करेंगे। मैं यह भी कह दूं कि- जिस प्रकार यह कला-भवन आर्य्यवर्त में एक अद्भुत चीज है उसी भांति इसके संस्थापक भाई अन्तराम का जीवन वृतान्त भी अद्भुत है। मैं चाहती हूँ कि आप उनके ही मुँह से उनकी कथा को ध्यान से सुनें।

उपस्थित जन समूह ने आवाज दी 'हम मिट्टी के व्यापारी अन्तराम को देखना चाहते हैं वे मंचपर खड़े होकर हमें दर्शन दें और अपने जीवन की अद्भुतता पर प्रकाश डालें।,,

जनता की मांग और प्रभावती के आदेश से अन्तराम मञ्च पर आये और उन्होंने समस्त जन समूह का सिर नवाकर अभिवादन किया। चारों ओर से एक आवाज गूँजी। "मिट्टी

का व्यवसायी अमर हो। सायापत्तन की समृद्धि को बढ़ाने को बढ़ाने वाला अन्तराम अमर हो।,, जन समूह के उल्लास में शांति आने पर अन्तराम ने कहना आरम्भ किया "महा-प्रभु ईशान के उपासको ! आप जिसे मेरा आविष्कार और व्यवसाय समझ रहे हैं, उसमें मैं तो शरीर मात्र हूँ। इनका प्राण तो महादेवी प्रभावती सेठानी हैं। इसी हेतु मैंने मातृ मूर्तियों का अधिक से अधिक निर्माण कराया है। मेरी यह मिट्टी की बनी मातृ देवियां विदेशी व्यापारियों और आगन्तुकों का बहुत ही पसन्द आईं। देश के विभिन्न कोनों में इनकी भारी मांग हुई। दो वर्ष के बाद ही मैं इन मूर्तियों से लखपती आदमी बन गया। इसके बाद मैंने ईशान देव की हजारों मूर्तियां बनाईं। आप लोगों के घरों में बरतन के लिये कला पूर्ण बर्तन बनाये। मोटरों में लगाने के लिये गटर बनाई। बच्चों के खेलने के लिये जंगली जानवरों की शक्ल की मूर्तियां बनाईं। स्नान के लिये कुँडिकायें बनाईं। ईशान देव के उपासक उन योगियों की मूर्तियाँ बनाईं जो महीनों के लिये समाधि ले जाते हैं या हफ्तों के लिये प्राणायाम कर बैठते हैं। त्रिशूल धारी मूर्तियों को वस्त्र और आभूषण वाली सुन्दरियों की रचना की। यह सब कुछ मैंने मिट्टी से बनाया। उस मिट्टी से जो सिन्धु के किनारे पर मिलती है और इनकी सतहें सेलखरी और सिलहटी पत्थर की जैसी चिकनी और लसदार होती हैं। मैंने इस मिट्टी को मसाले से चिरकाल तक ठहरने वाली, पानी से अनन्त काल तक न गलने वाली बनाया है। मेरी मिट्टी की मूर्तियां बेचने वाले मिश्र, ईराक, ईरान और समस्त सेमेटिक तथा सुमेरियन देशों में मिलते हैं। मैंने जहाजों, खच्चरों और बैलों पर चढ़कर अनेक देशों को देखा

है। मेरे यहां हजारों कारीगर इसी मिट्टी के वस्तुनिर्माण धन्धे मे लगे हुए हैं। अभी मैं ऐसी ऐसी वस्तुएँ बनाने की सोच रहा हूँ जिनके नमूने किसी भी देश में अप्राप्त हैं।

मित्रो ! अंत में मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि आरम्भ में मैं एक मजदूर था और मुझे मिट्टी का व्यापारी मूर्तियों का आविष्कारक बनाने का सारा श्रेय बहिन प्रभावती को है। उनके पड़ौस में आज भी मेरा झोंपड़ा खड़ा हुआ है। मेरे इन भव्य मकानों को देख कर आप यह नहीं समझें कि मैं किसी सेठ का बेटा हूँ।

× × × × ×

उत्सव समाप्त हो गया नागरिकजन रत्नपुरी—अन्तरास ने मायापत्तन के अपने नये उपनिवेश का यही नाम रक्खा था-से लौट कर अपने घरों को चल पड़े। मार्ग से प्रभावती के सिर पर प्रेम से हाथ फेरते हुए धनदत्त सेठ ने कहा मैं आज दस वर्ष बाद मानता हूँ कि तुम सच ही कहती थीं कि "व्यापार में लक्ष्मी का बास है,,।



## राष्ट्र की सम्पत्ति वर्द्धन के कुछ सिद्धान्त ।

रत्नमाला अवन्ति के प्रसिद्ध सेठ विभवदत्त की एक मात्र पुत्री थी । इसलिये प्रत्येक वणिक पुत्र उसके साथ विवाह करने का इच्छुक था किन्तु सबको निराश होना पड़ता जब यह सुना जाता कि रत्नमाला उसी के साथ शादी करेगी जो उसके इन प्रश्नों का सही उत्तर देगा "(१) व्यापारिक दृष्टि से कौनसा देश भाग्यशाली है ? (२) किस देश का व्यापार फलता फूलता है ? (३) धनी देश कौन है ? (४) व्यापारिक स्पर्द्धा में कौन देश जीतता है ? (५) भावों की कुँजी किस देश के हाथ में होती है ? (६) दूसरे देशों में किस देश का व्यापार घर कर लेता ?'(७) थोड़ी पूंजी से भी किस देश के व्यापारी बड़े से बड़ा व्यापार कैसे कर सकते हैं । ?

कहते हैं उसके यहाँ एक सौ चालीस साहूकार बच्चे चक्कियाँ पीसते थे क्योंकि प्रत्येक उम्मीदवार से वह यह तय कर लेती थी कि "यदि तुम मेरे प्रश्नों का सप्रमाण सही उत्तर नहीं दोगे तो तुम्हें मेरे यहाँ बारह साल चक्की पीसनी पड़ेगी ।

देश देशान्तरों में उसके सौन्दर्य की चर्चा थी । काँचनपुरी के सेठ लक्ष्मीदत्त के पुत्र गुणदत्त को जब यह समाचार मिला तो वह एक दिन बड़े तड़के ही अवन्ति नगरी की ओर घोड़े पर सवार होकर चल पड़ा । साथ में सिर्फ एक सेवक था । मां, बाप, मित्र और हितू सभी लोगों ने उसे समझाया किन्तु उसने सबको यही उत्तर दिया मैं सौन्दर्य का उपासक नहीं, गुणों का उपासक हूँ इसलिये प्राण देकर भी उस गुणवती को प्राप्त करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ ।

अवन्ति नगरी में शोर मच गया । नगर के आबाल

वृद्ध फिर सेठ विभवदत्त के उद्यान में इकट्ठे हुये रत्नमाला और गुणदत्त आमने-सामने दो चौकियों पर विराजमान थे । तभी सेठ विभवदत्त के मुनीम ने खड़े होकर सब लोगों को गुणदत्त का परिचय कराया और कहा तीन दिन से गुणदत्त हमारा अतिथि है। हमने उसे वापिस जाने को भी बहुत कहा है। अब देखना यह है उसका भाग्य रत्नमाला का पाणिग्रहण कराता है अथवा चक्की का । उपस्थिति जन हँस पड़े ।

रत्नमाला ने कहा; सेठ पुत्र ! मेरा पहला प्रश्न यह है कि "व्यापारिक दृष्टि से कौनसा देश भाग्यशाली है ? गुणदत्त ने किंचित मुस्कराते हुये उत्तर दिया—देवि ! "जो पराधीन नहीं है ।,, रत्नमाला चुप रही । गुणदत्त ने फिर कहा इसके प्रमाण में मैं तुम्हें एक कथा सुनाता हूँ । स्वर्ण देश के पश्चिम में ताम्र देश था ।अपनी व्यापारि कुटिलता के आधार पर ताम्र वासियों ने स्वर्ण वासियों पर कब्जा कर लिया स्वर्ण देश अब उनका एक मातहत बाजार बन गया । बाहर के तमाम देशों के साथ स्वर्ण देश का बराबरी का व्यवहार बन्द हो गया। स्वर्ण देश के पूर्व में बुद्ध द्वीप था बुद्ध द्वीप के तमाम बाशिन्दे गृह उद्योगों में बड़े चतुर थे । उन्होंने तमाम पश्चिमी देशों से माल पैदा करने में बाजी मारली । ताम्र देश जिस चीज को पाँच रुपये में देता था । बुद्ध द्वीप उसे सिर्फ बारह आने में तैयार कर देता था । स्वर्ण देश चाहता था कि वह बजाय ताम्र देश के अपना व्यापार बुद्ध द्वीप के साथ बढ़ाये किन्तु चूँकि वह स्वतन्त्र नहीं था । ताम्र देश का क्षत्रप स्वर्ण देश पर राज्य करता था इसलिये वह बुद्ध देश के माल (स्वर्ण देश में) आयात पर इतना भारी टैक्स लगा देता कि वह सस्ता न पड़ सके । इधर स्वर्ण देश के उद्योगों को भी वह ताम्र देश के उद्योगों से घटिया

ही रखने की कोशिश करता। इसके सिवा वह मुद्रा के बारे में भी दांव पेच चलता रहता था। जब स्वर्ण देश का पावना उस पर बढ़ जाता था तो वह अपनी मुद्रा की कीमत बढ़ा देता था और जब उसका पावना स्वर्ण देश पर बढ़ जाता था तो अपनी मुद्रा की कीमत घटा देता था और लेना देना होता था "विनिमय पद्धति,, से। वह सदा ही अपने देश के पावने में अपनी मुद्रायें लेता था और स्वर्ण देश के पावने में स्वर्ण देश की मुद्रायें अदा करता था। इस प्रकार उसने स्वर्ण देश के व्यापार को अपनी मर्जी के लिये और अपने लाभ के लिये प्रयोग कर रक्खा था।

इस मर्म को स्वर्ण देश के क्षत्रिय न समझते थे क्योंकि वे तो तलवार चलाना और न्याय करना जानते थे ताम्र लोगों ने उनकी रियासतों और जागीरों को नहीं छुआ इसलिये वे संतुष्ट थे। ब्राह्मण भी इस रहस्य के बारे में अनभिज्ञ थे क्योंकि धर्मशास्त्रों का पाठ और देवताओं की पूजा उनका धंधा जो ताम्र लोगों की हुकूमत में बिना बाधा के चल रहा था। शूद्र बेचारों को इन बातों से कोई मतलब ही नहीं था। एक अत्यन्त अनुभवी बनिये से जो व्यापारी तो न था किन्तु व्यापार के सिद्धान्तों को बहुत अधिक समझता था यह मर्म छिपा न रह सका। उसने बड़े जोरदार शब्दों में अपने देशवासियों से ताम्र लोगों की अधीनता से मुक्त होने की अपील की और उसने ताम्र लोगों के विरुद्ध उनके देश की बनी वस्तुओं की होली जलाकर पहला मोर्चा लिया। कई वर्ष के संघर्ष के बाद स्वर्ण देश में ताम्र देश के झंडे के स्थान पर स्वर्ण देश का झंडा फहराने का अवसर स्वर्णवासियों को मिला। उनके झंडे पर चर्खे का निशान था "जो यह बता रहा

कि स्वर्ण देश ने आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त करली है और दुनियां ने देखा स्वर्ण देश अब पहले से अधिक समृद्ध है।

रत्नमाला अपने आसन से खड़ी हुई और उसने नागरिकों को सम्बोधित करते हुए कहा, "श्रेष्ठिजनो ! गुणदत्त सेठ ने मेरे पहले प्रश्न का उत्तर सही और सप्रमाण दिया है। मैं उनके इस उत्तर से संतुष्ट हूँ।"

सभा दूसरे दिन के लिये स्थगित हो गई।



व्यापार का साधन

# यातायात

हाथ में कमल फूल लिए दूसरे दिन गुणदत्त श्रेष्ठि फिर रत्नमाला के दरबार में पहुँचा। हल्के बसन्ती रङ्ग की साड़ी पहने रत्नमाला नियत समय पर दरबार में पधारी। नागरिक लोगों ने उल्लास भरे नेत्रों से उसे निहारा। उनकी दृष्टि में रत्नमाला सरस्वती देवी का साक्षात अवतार थी और वे समझते थे कि विद्या, बुद्धि में उसकी समता देवों के आचार्य बृहस्पति ही कर सकते हैं। आसन पर संभल कर बैठते हुए रत्नमाला ने कहा, अतिथिवर! "किस देश का व्यापार फलता फूलता है? मेरे इस दूसरे प्रश्न का उत्तर देने का कष्ट कीजिये। कुछ देर सोचने के बाद गुणदत्त ने गम्भीर मुद्रा से उत्तर दिया, सुन्दरि! जिस देश के पास यातायात के जितने ही अधिक साधन होंगे, उसका व्यापार उतना ही अधिक फूलेगा फलेगा। इसके प्रमाणमें मौर्यों के यशस्वी सम्राट महाराजा अशोक के समय कीएक कथा मुझे याद आती है।

एक दिन जब देवताओं के प्रिय राजा अशोक भिक्षुओं की गोष्टी से लौट रहे थे। मार्ग में उन्हें बणजारों, वणिकों और श्रेष्टि लोगों का एक शिष्ट-मण्डल मिला। मार्ग के पास सुवासित आम्र वृक्षों की एक वाटिका थी 'महाराज, उसी की ओर मुड़ पड़े। पीछे पीछे पीछे व्यापारियों का वह शिष्ट-मण्डल था। एक श्रेष्टी ने अपना चम्पानगरी का बना-रेशमी दुपट्टा महाराज के बैठने के लिये बिछा दिया।

महाराज अशोक वृक्ष के तने का सहारा लेकर बैठ गये क्योंकि वह थके हुए थे और श्रमजनित प्रस्वेद बिन्दु उनके माथे पर झलमला रहे थे। वणिक और वणजारे उनके सामने शिघ्रता के साथ बैठ गये। देवताओं के प्रिय राजा ने पूछा:—

"तथागत के मार्ग में तुम्हारी आस्था तो है न,,?

"हां, महाराज, तथागत हमारे हृदयों के देवता हैं। उन लोगों ने उत्तर दिया।"

"राज का सब काम धर्म पूर्वक चलता है न ?" महाराज ने पूछा।

"हम धर्म राज्य का आनन्द ले रहे हैं राजन," वणिक बोले।

"जिन जनपदों में तुम रहते हो; उनमें कोई विग्रह तो नहीं" ?

"नहीं धर्मावतार !" महाराज के प्रश्न के उत्तर में श्रेष्ठि जनों ने कहा।

महाराज के चेहरे पर प्रसन्नता की झलक पड़ी। तब माधवदत्त नामक श्रेष्ठी ने खड़े होकर महाराज को तीन बार सिर झुकाया और इस तरह कहना आरम्भ किया।

शांतिप्रिय राजन ! श्रीमानों के महाराज्य में चारों ओर शांति है। सभी लोग तथागत के उपदेशों पर चलते हैं। कमा कर खाने की सब की वृत्ति है। कृषि और गृह-उद्योग पूर्ण उन्नति पर हैं। यह सब कुछ है राजन ! और इस शांति-काल में उत्पादन इतना बढ़ गया है जिसका कोई पार नहीं; लेकिन धर्मावतार गृह-उद्योगों और कृषि से उत्पन्न हुए माल क समय पर खपत होने का प्रबन्ध नहीं हो रहा है यदि यही दशा रही तो लोगों की उत्पादन की ओर से रुचि हट जायगी क्योंकि जब उनकी पैदा की हुई वस्तुओं के उचित और समय पर दाम ही नहीं मिलेंगे तो उनका उत्साह मर

जायगा। भरुकच्छ देश में इस वर्ष लाखों मन रुई वहां की आवश्यकताओं की पूर्ति से अधिक पड़ी है। मरु देश में उसकी खपत हो सकती है? वंग देश में चावल पड़ा है। सूरसेन देश को उसकी आवश्यकता है। पांचाल में गेंहू अधिक हुआ है। हरि देश (हरियाणा) को उसकी आवश्यकता है। चम्पानगरी के टसर के वस्त्र गोदामों में भरे पड़े हैं। जांगल देश की लोइयां पड़ी सड़ रही हैं।

महाराज ने श्रेष्ठी माधव की बातों को बड़े ध्यान से सुना और कुछ देर गंभीर मुद्रा से कुछ सोचकर बोले तब आप का कहना यह है कि एक जनपद का माल सुदूर के दूसरे जनपद तक ले जाने के साधन आपको प्राप्त नहीं हैं। मेरे पिता के योग्य मन्त्री आचार्य कौटिल्य ने आज से कई वर्ष पूर्व एक योजना इस प्रकार की कठिनाइयों को दूर करने के लिये बनाई थी। कलिंग की लड़ाई और उसमें होने वाले रक्तपात से मेरे हृदय पर छाई उदासीनता ने इस योजना को प्रयोग में आने में विलम्ब कर दिया, अब आप प्रसन्नता से यह समाचार सुनेंगे कि "माल की खपत,, का प्रबन्ध मौर्य सरकार तत्परता के साथ कर रही है।

अगले वर्ष सुना गया—

पाटिलीपुत्र से अवन्ति तक एक राजमार्ग मौर्य सम्राट बनवा रहे हैं। शिल्पियों को उन्होंने आज्ञा दी है कि इस भांति की नौकायें और जलपोत वह तैयार करें जो हजारों मन अन्न और दूसरी चीजें देश के मध्य भागों से होकर समुद्र के बन्दरगाहों तक ले जायें। नदियों को पार करने के लिये लकड़ी के पुल और झूले बनाने की आज्ञा उन्होंने निर्माण विभाग के मन्त्रियों और राज्य के प्रसिद्ध नगरों की पौर सभाओं को दे दी है। प्रत्येक चौराहे पर धर्मशाला, सराय और पड़ाव बनना आरम्भ हो गया है। पहाड़ों को पार करने के लिये सुरंगें

देश की समृद्धि पर

# आयात निर्यात का प्रभाव

तीसरे दिन रत्नमाला के दरबार में अवन्ति नगरी की अनेकों विवाहित और अविवाहित सुन्दरियाँ भी आई क्योंकि रत्नमाला के दो प्रश्नों का सही उत्तर देने से नगर वासियों को यह विश्वास हो गया था कि श्रेष्ठिकुमार गुणदत्त अवश्य सफल होगा और वही रत्नमाला का पति बनने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। ऐसे भाग्यशाली युवक को देखने की उत्कण्ठा ही अवन्ति की सुन्दरियों को उस सभा में खींच लाई। प्रत्येक नर-नारी की आँख गुणदत्त पर थीं वे सभी देखने वाले उसके गुण और रूप की प्रशंसा करते थे। वह मुस्कराता हुआ रत्नमाला के इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये खड़ा हुआ। "धनी देश कौन है ?,,

उसने कहा सुन्दरी ! जहाँ तक मैं जान पाया हूँ जिस देश में कच्चे माल का आयात ज्यादा निर्यात कम और पक्के माल का निर्यात ज्यादा और आयात कम होता है वह देश अवश्य 'धनी, बन जाता है।,, इस सम्बन्ध में कुशान समाट महाराजा कनिष्क के समय की एक वार्ता मुझे याद आती है।

कपिशा नगरी के अधिपति लम्बा ऊँनी अँगरखा और रोम देशीय टोपी पहने हुये अपनी नई राजधानी 'पुरुषपुर के एक अंगूर उद्यान में टहल रहे थे। उसी समय रोम देश का एक व्यापारी जिसका नाम बेनिटो था अपनी नौजवान पुत्री 'मरियम रोज, के साथ महाराजा की सेवा में उपस्थित हुआ

वह कई वार उत्तरी भारत में अपने व्यापार के सिलसिले में पहले भी आ चुका था इसलिए महाराज कनिष्क उससे परिचित थे। लम्बा और गोरा शरीर सेव जैसे सुर्ख कपोल, बड़ी-बड़ी आँखें उस पुष्टान ( पठान ) भूमि के राजा कनिष्क की सहज ही दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने वाली थी। मिस रोज भी बड़ी तन्मयता से महाराज को निहार रही थीं कभी उनकी निगाह महाराज के ऊन वालों की ओर लटक जाती जो कलस की हुई मंहदी के समान पीछे की ओर कंधों तक रहे थे। कभी उनकी मोटी और गौर वर्ण अंगुलियों पर। वह सोचती थीं हमारा रोम नगर समृद्धि में आज संसार के सभी नगरों का मुकुट है किन्तु इतने स्वस्थ्य और सुन्दर पुरुष के दर्शन उस वैभवशाली नगर में आज तक नहीं मिले। मैंने काकेशश के युवाओं को भी देखा है। वे भी इस देव पुरुष की समता नहीं कर सकते। वेष-भूसा में भी यह देव पुरुष विचित्र है। काश्मीरी ऊन का अँगरखा और जिस पर रोम नगरी का बना हुआ टोप।

महाराजा कनिष्क की निगाह भी उस सुन्दरी पर थीं किन्तु उसके रूप पर नहीं अपितु उस कोट पर थीं जो ऊन का बना होते हुये भी रेशम की भांति मुलायम जान पड़ता था। महाराज उस कोट को देखने के लोभ को न संभाल सके और रोज के पास आकर उन्होंने स्कंध फाग पर हाथ रखते हुये कहा, मौसिये बेनिटे ! क्या यह अमूल्य वस्तु रोम नगरी की उपज है। बेनिटे जवाब दे कि बीच में ही मिस रोज ने कहा प्रिय महाराज! यह उपज तो भारत की ही है किन्तु इसे सुन्दर और कीमती बनाने का श्रेय मेरी रोम नगरी को है। महाराज कनिष्क सहम गये क्योंकि मिस रोज के इस कथन में उन्हें एक मीठे व्यंग का आभास हुआ।

मिस रोज ने आगे कहना आरम्भ किया श्रीमन ! आप जो अँगरखा पहन रहे हैं वह भी काश्मीरी ऊन का बना है और मेरा कोट भी काश्मीर ऊन का। हमारे देश के व्यापारी आपके देश से ऊन, कपास, सन और जूट ले जाते हैं इसे हम कच्चा माल कहते हैं हमारे यहां यह कच्चा माल कारीगरों के हाथ के नीचे पड़कर पक्का बनता है। ऊन को खूब कमाकर और पक्का नीला रंगकर यह सर्ज बनाया गया है जिसे मैं पहन रही हूँ। आपके देश की रुई से हमारा देश फुलालाइन तैयार करता है। यहाँ से जो पीतल हम ले जाते हैं उसकी आपके लिये देव मूर्तियाँ, वाद्ययन्त्र आदि बनाकर देते हैं। रोम नगरी के समृद्धिशाली होने का एक बड़ा कारण यह है कि उसमें कच्चे माल को पक्का बनाने वाले हजारों, लाखों कारीगर और सैकड़ों हजारों घरेलू कारखाने हैं वहाँ से कच्चा माल बहुत ही कम बाहर को जाता है, हाँ कच्चा माल आता काफी है। जिसे पक्का बनाकर बाहर को भेज दिया जाता है।

महाराजा कनिष्क देवदार के पेड़ की टहनी को पकड़ कर खड़े थे। अंगूरों की बेलों से घिरे हुये देवदार के शुष्क वृक्ष कोमल लताओं के बीच अपनी मजबूती का परिचय अडिग भाव से दे रहे थे। मिस रोज ने आगे कहा प्रिय महाराज ! आपका यह वृक्ष अगर इसी हालत में बेच दिया जाय तो दस रजत मुद्रा से अधिक मूल्य का नहीं और यदि इसे कारीगरों के हवाले कर दिया जाय तो वे इसके कुर्सी, मेज, कलमदान, शृङ्गारदान, बुरुश, पलङ्ग और इससे अधिक सुन्दर और उपयोगी चीजें बनाकर हजारों रजत मुद्राओं का बना सकते हैं। यही कच्चे और पक्के माल का अंतर है।

महाराज कनिष्क के दरबार में शैव और बौद्ध विद्वानों

का बड़ा जमघट था। वे समय समय पर उन सभी के उपदेश भी सुना करते थे किन्तु आज मस रोज की बातों में जैसा आनन्द उन्हें आ रहा था वैसा कभी नहीं आया था।

बेनिटो जो अब तक चुपचाप खड़ा था, बोला प्यारी बेटी! महाराज तुमसे कहीं बहुत ज्यादा जानते हैं अब उन्हें उद्यान को देखने दो। हमें दोपहर बाद पुनः महाराज की सेवा में कुछ उपहार लेकर उपस्थित होना है।

'सुप्रभातम्' कहकर मिस रोज और बेनिटो विदा हुये महाराज कनिष्क जहाँ के तहाँ खड़े कुछ देर सोच रहे थे। तभी कुमार हुविष्क ने आकर महाराज का हाथ पकड़कर झंझोलते हुये कहा, पिताजी भिक्षु वसु बन्धु इधर आरहे हैं। वे बहुत देर से आपकी तलाश में हैं।

सातवाँ दिन—

पौर सभा और संथागार के प्रवेश द्वारों पर लगे काले तख्तों पर सफेद खरिया से लिखी हुई राजाज्ञा को जनसमूह पढ़ रहा था:—

राजातिराज श्री महाराज कनिष्क यह अत्यन्त आवश्यक समझते हैं कि केवल अन्न को छोड़कर प्रायः सभी कच्चे पदार्थों को पक्के बनाने के गृह धन्धे आरम्भ किये जावें। अंगूरों का सोम रस और द्राक्षाओं का द्राक्षासव ऊन के शाल पशमीने और देवदार वृक्षों के छोटे बड़े मंजूषे और खिलौने बनाकर ही बाहर भेजे जाँय।

साहनसाहि यह भी आज्ञा देते हैं कि घरेलू धन्धों की शिक्षा पाने के लिये जो लोग रोम, लासा और वैक्ट्रिया जायेंगे उनका समस्त व्यय भार राज्य के कोष से दिया जायगा। कपिशा के अधिपति शीघ्र ही एक शिष्ट मण्डल विदेशों में

यह जानने के लिये भी भेज रहे हैं कि किस देश की बनी और पैदा की हुई किन वस्तुओं की खपत हो सकती है?

कुशान सम्राट का मन्शा यह है कि देश धनी बने उनको यह विश्वास हो गया है कि कच्चे माल के निर्यात को घटाया जाय और उसे पक्का बनाकर विदेशों में भेजा जाय।"

इतवार का दिन था—

एक नौका कुम्भा नदी से अरब सागर की ओर जा रही थी। उसमें नाविक के अलावा दो प्राणी और थे। पिता ने कहा बेटी रोज तुमने महाराज कनिष्क को यह मन्त्र बताकर रोम देश का हित नहीं किया अपितु भारत का हित किया है।

———

समृद्धि का आधार

# उत्पादन

चौथे दिन रत्नमाला ने पूछा श्रेष्टिकुमार ! "व्यापारिक स्पर्धा में कौनसा देश बाजी मार सकता है ।" सेठ गुणदत्त आज उदास थे क्योंकि रात को वे महा कालेश्वर के मन्दिर में शिव चतुर्दशी का उत्सव देखने चले गये थे । वहाँ उन्होंने जो कुछ देखा उससे उनका दिल खोया-खोया सा हो रहा था। रंभा और उर्वशी से सौन्दर्य में बाजी लेने वाली अवन्ति रमणियों के नृत्य और गान ने उनके मन को हर लिया था। मँझले कद, पतली कमर, उठे हुए उरोज और पुष्ट नितम्ब वाली उन सुन्दरियों के छाया चित्र बार बार उनकी आँखों के सामने आ, जा रहे थे इसलिए वे रत्नमाला के प्रश्न को भली भांति सुन ही नहीं सके । स्वप्न से जागते हुए व्यक्ति की भांति उन्होंने रत्नमाला से पूछा देवि ! आप अपने प्रश्न को पुनः दोहरावें।

अपने प्रश्न को दोहराते हुए रत्नमाला ने किंचित् व्यङ्ग से कहा श्रेष्टि कुमार ! यह मालव भूमि है इसमें ठग न जाना । गुणदत्त सहम गये और संभल कर बोले देवि ! हम ठग भी जांयगे तो भी चिन्ता की बात नहीं क्योंकि हमारा उत्पादन बढ़ा हुआ है । प्रश्न का उत्तर मिल चुका था इसलिये रत्नमाला घर जाने के लिये खड़ी होगई । उपस्थित समुदाय ने समझा गुणदत्त ने श्रेष्टि कुमारी से मजाक किया है इसलिए वे नाराज होकर खड़े हो गये चारों ओर कोलाहल मच गया। सेठ गुणदत्त पर आवाजें कसने लगे । स्थिति को अधिक बिगड़ते

देख कर रत्नमाला ने दोनों हाथ उठा कर संकेत करते हुए कहा, "मालव लोगो ! मेरे प्रश्न का उत्तर मिल चुका है।" आप कोई दूसरी बात न समझें। सेठ गुणदत्त ने विनोद के तौर पर कह दिया है कि "बढ़े हुए उत्पादन वाला देश" व्यापारिक क्षेत्र की स्पर्द्धा में ठगा नहीं जा सकता। हां, आप लोग चाहें तो इसकी व्याख्या में उनसे कोई कथा कहानी सुन सकते हैं।

चारों ओर से आवाज आई' अवश्य ! अवश्य !! रत्नमाला भी बैठ गई। कोलाहल भी शाँत हो गया। तब अवन्ति पौरसभा के अध्यक्ष ने उपस्थित समुदाय की ओर से सेठ गुणदत्त से उस धृष्टता के लिये क्षमा माँगी, जो गलत फहमी पैदा होने के कारण लोगों से बन पड़ी थी।

गुणदत्त समझदार आदमी थे गहरा मजाक करने की उनकी आदत थी। हँसते हुये बोले। सभ्य जनो ! रत्नमाला को आप सब इस प्रकार प्यार करते हैं। यह मुझे आज ही मालूम पड़ा। मंच पर बैठे हुये लोग सहम गये।

गुणदत्त सेठ ने आगे कहना आरम्भ किया—नागरिक बन्धुओ ! किसी समय प्रशांत सागर में दो टापू थे। एक का नाम रत्न द्वीप था और दूसरे का नाम यव द्वीप। रत्न द्वीप में हीरे पन्ने उसकी पहाड़ी खानों से और मोती मूंगा समुद्री घाटों से निकलते थे। देश के भीतरी भाग में सोने, चाँदी, ताँबे, और लोहे की खानें थीं। यव द्वीप में इन चीजों के दर्शन तक नहीं थे हां वहां नदियों के किनारे गेहूँ जौ कपास अवश्य होती थी। एक समय यव द्वीप का राजकुमार सुभद्र रत्न द्वीप में जा निकला। एक सुवासित उद्यान में जो एक पहाड़ी पर अवस्थित था उसने रत्न द्वीप की राजकुमारी हीरादेवी को देखा। उसके गले में मुक्ताहार था। कानों में मूँगे चमक रहे थे। पैर और स्वर्ण भूषणों से लदे हुये थे। राजकुमार सुभद्र हीरादेवी पर

आसक्त हो गया उसने अपने सहचर को हीरादेवी के पिता रत्नप्रभ के पास हीरादेवी के साथ पाणिग्रहण का संदेश लेकर भेजा। उत्तर में रत्नप्रभ ने कहलाया 'यव द्वीप' एक कंगाल देश है। समृद्धि देश का राजा उसके राजकुमार के साथ अपनी पुत्री का सम्बन्ध करना उचित नहीं समझता।' राजकुमार सुभद्र का इस उत्तर से सिर नीचा हो गया और वह अपने देश को लौट आया।

उसने अपनी नानी से कहावत सुनी थी 'अन्न धन अनेक धन सोना रूपा आधा धन।' इस कहावत के याद आते ही उसके मन की उदासी दूर हो गई। उसे यह भी मालूम था कि रत्नद्वीप के लोगों के लिये जीवनोपयोगी समस्त वस्तुयें प्रायः बाहर से आती हैं। उस देश के अधिकांश व्यक्ति खनिक और नाविक हैं। कृषि और उद्योगों की ओर न तो प्रजा की रुचि है और न राज पुरुषों की। इस दूसरी बात ने उसे उत्साहित किया।

राजकुमार सुभद्र ने अपने मन्त्रियों को इकट्ठा किया उसने एक मन्त्री के जिम्मे गेहूँ, जौ, कपास और गन्ने की उपज को बढ़ाने तथा उन्नत नस्ल का अन्न, कपास, गन्ना, पैदा कराने का काम सौंपा। दूसरे मन्त्री को नदियों से नहरें निकालने पहाड़ों की तलाइयों में बन्द बनवा कर पानी को रोकने और उसे सिंचाई के काम में लाने का विभाग सुपुर्द किया। तीसरे मन्त्री के सुपुर्द बुनाई, कताई, रंगाई, और शिल्पकारी सम्बन्धी धन्धों को सौन्दर्य प्रदान करने तथा बढ़ाने का काम सौंपा। चौथे मन्त्री के हाथ गौ-वर्द्धन का काम दिया।

प्रत्येक काम को राजकुमार स्वयम् देखता था। इसलिये पाँच वर्ष के भीतर ही सब वस्तुयें पहले से दुगनी और अच्छी

पैदा होने लग गईं। देश की आवश्यकताओं के अलावा राजकुमार सुभद्र ने अपने देश के माल को रत्न द्वीप में भेजना आरम्भ कर दिया। अन्न, मक्खन, गुड़, शकर और वस्त्रों के बदले में रत्नद्वीप से सोना, चांदी और मूँगा, मोती यवद्वीप में आने लगे।

दूसरे देश भी रत्नद्वीप के साथ व्यापार करते थे किन्तु यवद्वीप का उत्पादन इतना अधिक बढ़ गया था कि सभी अन्य देशों को जो रत्नद्वीप से व्यापार करते थे यवद्वीप ने मात दे दी पन्द्रह बीस वर्ष के अन्दर यवद्वीप का रत्नद्वीप में व्यापार सम्बन्धी एकाधिकार हो गया।

उस घटना से जबकि रत्नद्वीप के राजा ने यवद्वीप को कंगाल देश बताकर वहां के राजकुमार को अपनी लड़की व्याहने से इन्कार कर दिया था—ठीक पच्चीस वर्ष बाद रत्नद्वीप का बुड्ढा राजा यवद्वीप में पधारा। आज यवद्वीप गुलजार था चारों ओर धरती पर हरियाली छाई हुई थी। जगह-जगह घरेलू शिल्पशालायें अपनी शोभा दिखा रही थीं। खेतों में काम करने वाली किसान महिलायें हाथों में स्वर्ण कड़े गले में रत्न जड़ित स्वर्ण हार और कमर में बर्फ जैसी सफेद करधनियां पहने हुये थीं उनके पैरों के पायजेब और नूपुरों की झंकारों से वरुण-वाद्य का आनन्द आ रहा था जब बुड्ढा रत्नप्रभ राजमहलों में घुसा तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यवद्वीप के राजा का सिंहासन ही स्वर्ण का नहीं है अपितु वह बारहदरी भी स्वर्ण स्तम्भों की बनी हुई है जिसके कि बीच में सुभद्र राजा का सिंहासन है। महाराज शुभ्र रत्न जड़ित चंदोवा के नीचे जरीन मसनद का सहारा लिये बैठे

थे। उनके दरबारियों की पोशाक भी जर्रीन थी जिनके अंग-रखों के स्कंध भाग पर पन्ने और हीरों का जड़ाव था।

बुड्ढे राजा रत्नप्रभा के दिल में सहसा आया काश! यहां मेरी बेटी ब्याही हुई होती।



# भाव किसके हाथ?

पांचवे दिन रत्नमाला ने सेठ गुणदत्त को सम्बोधित करते हुए पूछा, महाशय ! "वस्तुओं के भावों को घटाने बढ़ाने की कुँजी किस देश के हाथ में होती है ?' गुणदत्त सेठ ने कहा, सुभगे ! वैसे तो लोग यह कहते चले आते हैं कि "भाव और न्याय आकाश से उतरते हैं।' किन्तु जहाँ तक राष्ट्रीय व्यापार का सम्बन्ध है यह कहावत वहीं तक सच है ‡ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार क्षेत्र में तो भावों को घटाना बढ़ाना उस देश के हाथ में होता है जो मुद्रा नीति का निर-धारक होता है।' इस प्रसङ्ग में मुझे एक बात याद आती है जो हरिवर्ष (देश) के दो राज्यों से सम्बन्ध रखती है।

कहते हैं काकेशश पर्वत की रमणियां अपने सौन्दर्य के लिये बहुत मशहूर हैं। फारस देश के लोग तो इन्हें कोह्-काफ की परियों के नाम से पुकारते हैं। पार्शियन स्त्रियां काफी खूबसूरत होती हैं; किन्तु पार्शियन रसिक ग्रन्थों में पारस युवकों को पागल बनाने वाली कोह् काफ की सुन्दरियों को ही बताया गया है। इन काकेशश लोगों के पड़ौस में ही उजबक लोग रहते हैं। अपनी शारीरिक मजबूती के लिये उजबक समस्त हरिवर्ष देश में प्रसिद्ध हैं। इन्हीं उजबकों के

---

‡ जब आकाश बरसता है तो अन्न अधिक पैदा होने से सस्ता हो जाता है। नहीं बरसता तो महंगा होजाता है। पुरातन समय में न्याय पञ्चों द्वारा होता था। पञ्च को पर-मेश्वर कहते थे अतः वह आकाश समझा जाता था।

आ गया और उनके माल की माँग भी काकेशश में बराबर बढ़ने लगी।

काकेशिया सम्राट को अपने देश में शौकीनी बढ़ने और आर्थिक ह्रास होने का बड़ा रंज रहने लगा। उसने उजबक देश के माल को अन्धाधुन्ध आने से रोकने के लिये उस पर चुँगी लगाई किन्तु इस पर भी उसका आयात कम नहीं हुआ तब उसने अपने राज्य के तमाम प्रमुख कबीलों के सरदारों को इस समस्या के हल करने के लिये आमन्त्रित किया।

राजा ने चाहा कि चुँगी की दर को और भी ऊँचा कर दिया जाय, जिससे उजबकों को अपने माल की पूरी कीमत ही न मिले। इस पर एक सरदार ने राजा की इस तजवीज का इस दलील के साथ विरोध किया कि यह उपाय समस्या का वास्तविक हल नहीं है। इससे हमारे देश में भी हलचल मचेगी और उसका खुला आयात बन्द होकर चोरी से आना आरम्भ हो जायगा। मैं तो इस सम्बन्ध में यह मुनासिब समझता हूँ कि उसके सिक्के की कीमत गिरादी जाय आज उनकी मुद्रा हमारी मुद्रा के बराबर मूल्य की है। अब हम यह देख लें कि प्रतिवर्ष हमारे देश में कितनी कीमत का पक्का माल उनके यहाँ से आता है और कितनी कीमत का कच्चा माल वे हमारे देश से खरीदते हैं। अर्थमन्त्री ने बताया उजबक लोगों से हमारा देश प्रतिवर्ष पचास लाख मुद्रा का लेन-देन करता है। उसमें उन्हें दस लाख मुद्रा का प्रतिवर्ष मुनाफा होता है। माननीय सरदार के सुझाव के अनुसार यदि हम उजबक मुद्रा की कीमत काकेशश मुद्रा से पौन करदें तो हम ढाई लाख प्रतिवर्ष के मुनाफे में रह सकते हैं।

उजबक लोग सिर पीट कर रोने लगे जब उन्होंने सुना कि उनकी मुद्रा की कीमत काकेशश में बारह आना रह गई है।

# टिकाऊ और कलापूर्ण

शुभ्र वेश धारी रत्नमाला के सभा स्थल में पधारने पर उपस्थित जन समूह में शांति का वातावरण पैदा होगया। सेठ गुणदत्त ने भी उन लोगों से छुटकारा पाया जो अनेक प्रश्नों की झड़ी लगाकर उसे चार घड़ी से तङ्ग कर रहे थे। कोई उनसे पूछता था आपके यहां किस चीज का व्यापार है ? कोई पूछता क्या तुम्हारे पिता कोई प्रसिद्ध व्यापारी थे ? किसी किसी ने तो उनकी मां और बहिनों के नाम तक पूछने का दुस्साहस किया।

आसन ग्रहण करते हुए रत्नमाला ने पूछा श्रेष्ठि कुमार "दूसरे देशों में किस देश का व्यापार घर कर लेता है ? अपने सिर के घुँघराले बालों में अंगुली डालते हुए सेठ गुणदत्त ने उत्तर दिया कुमारी ! जो देश कलापूर्ण और टिकाऊ माल तयार करता है वह किसी भी अन्य देश में अपने व्यापार के लिये स्थान-बना लेता है। रत्नमाला ने कहा श्रेष्ठि-कुमार मानलो मालव और आनर्त दोनों देशों में कपास पैदा होती है और इतनी पैदा होती है जो अपने अपने देश की आवश्यकताओं के लिये काफी है फिर यह कैसे संभव है कि आनर्त की कपास की मालवा में अथवा मालवा की कपास की आनर्त में खपत प्रिय बन जाय ?

सेठ गुणदत्त बोले सुभगे ! मेरे उत्तर के दो अङ्ग हैं, एक यह कि जिस देश का माल कला पूर्ण होगा वह दूसरे देश में स्थान प्राप्त कर लेगा। दूसरे यह कि माल टिकाऊ होने पर भी दूसरे देश में अपने लिए स्थान पैदा कर लेगा। पहले मैं कला की बात को लेता हूँ और इस विषय पर तुम्हें एक

कहानी सुनाता हूँ। चम्पक देश के लोग कारीगरी में बड़े निपुण हैं। उनके देश की बनी कोकटी और अरण्डी चद्दरें तुम्हारे मालवे तक आती हैं। हम कह सकते हैं कि चम्पक देश की बराबर किसी भी देश में कपड़े तय्यार नहीं होते। उसी चम्पक देश के पड़ोस में काश्य देश है। बड़ा उपजाऊ और रम्य। उस काश्य देश में अब से पचास वर्ष पहले देव-शर्मा नाम का राजा राज्य करता था। एक दिन वह अपनी प्रिय रानी अनङ्गप्रभा के साथ नौका विहार के लिये गङ्गा में उतरा। एक सुन्दर नौका पर राजा और रानी सवार हुए। केवटों के यह पूछने पर कि श्री महाराजा किधर चलें? उन्होंने प्रवाह के साथ नौका को छोड़ने का हुकम दिया। जिस द्रुत गति से भगवान भुवन भास्कर पश्चिम की ओर अपने सप्त कर्णि घोड़े वाले रथ को लेकर दौड़े चले जा रहे थे उसी भांति राजा सुशर्मा की नौका पूर्व की ओर शीघ्रता से बही चली जा रही थी। नौका की गति को उस वायुकोप ने और भी तेज कर दिया जो अभी अकस्मात उठ खड़ा हुआ था। रानी अनङ्गप्रभा खतरे को सिर पर आते देख अपने प्रियतम से चिपट कर बैठ गई। केवट और महाराज सुशर्मा दोनों ही नौका को बार बार डूबने से बचा रहे थे लेकिन [illegible] जोरदार झोंकों से उठे हुए भँवर प्रतिवार नौका को [illegible] की कोशिश कर रहे थे। सूर्यास्त से चन्द्रोदय तक लगभग दो पहर तूफान से युद्ध करते हुए नौका [illegible] गङ्गा के बायें किनारे जा लगी। पास में ही एक छोटा सा गांव था। राजा सुशर्मा रानी का हाथ पकड़ कर नौका से उतरे और गांव की ओर चले। सामने के एक झोंपड़े में दीपक टिमटिमा रहा था और उसके मन्द प्रकाश में [illegible] षोडशी युवती सामने फैले

वस्त्र पर कसीदा काढ़ रही थी। अपने झोंपड़े में घुसते हुए अतिथियों को देखकर वह उठी और चटाई बिछाते हुये बोली यह तो एक गरीब बुनकर की विधवा बेटी की झोंपड़ी है यदि मेरे सभ्य अतिथि इसमें रात काटना पसन्द करें तो मुझे प्रसन्नता होगी। अधिक सुख से रहने के लिये यहां हमारे चौधरी का मकान है। रानी अनङ्गप्रभा ने कहा बेटी आज की अपनी विपत्ति पूर्ण रात्री को हम तेरे इस झोंपड़े में ही काटना पसन्द करेंगे।

दूसरे दिन प्रातः जब राजा रानी चलने लगे तो उस युवती ने एक सुन्दर रूमाल जिस पर अनेक सुनहरी बेल बूटे कढ़े हुए थे रानी अनङ्गप्रभा को भेंट किया। राजा रानी उस रूमाल को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

युवती के घर में अरगनी के ऊपर कुछ छपी हुई और बेल बूटों से चित्रित साड़ियां और चादरें भी लटकी हुई थीं। रानी अनङ्गप्रभा ने उनमें से एक साड़ी को स्पर्श करते हुए कहा, बेटी इसका मूल्य क्या होगा? युवती ने कहा, माताजी ये साड़ी चम्पक देश से दस रजत मुद्रायें सादा रूप में आई थी। इसे हमने छापा है। किनारे पर सुनहरी बेलें काढ़ी हैं। मध्य में रजत स्वर्ण मिश्रित तारों के फूल बनाये हैं। अब इस का मूल्य दस स्वर्ण मुद्रा है।

राजा सुशर्मा ने कहा, पुत्री चम्पक देश के माल से मेरा सारा काशी राज्य पटा पड़ा है। मैं बहुत दिनों से इस चिन्ता में था कि यही दशा चम्पक देशीय माल के आयात की रही तो मेरा देश उसके मुकाबिले में गरीब हो जायगा किन्तु धन्य है तुझे जो चम्पक देश के माल को कलापूर्ण बनाने का आदर्श हमारे सामने रक्खा है। हम इस कला की शिक्षा अपने राज्य

के हजारों आदमियों को देकर इस धन्धे को प्रोत्साहन देंगे और फिर इसका निर्यात बढ़ाकर अपने देश को धनी बनाने का प्रयत्न करेंगे।

युवती यह जानकर प्रसन्नता से गद्गद् होगई कि धानके पयाल पर सोकर रैन बसेरा करने वाले दम्पति अतिथि उसकी पवित्र राष्ट्रभूमि काशी के महाराज महारानी हैं।

× × × ×

थोड़े ही दिनों में बनारसी गोटे की साड़ियों की चर्चा सारे देश में फैल गई।

रत्नमाला संतुष्ट थी। किन्तु उसका चित्त इस समय सभा भवन में नहीं था अपितु घर के रजत मंजूषा में रक्खी हुई बनारसी साड़ी को देख रहा था।

गुणदत्त बोले रत्नमाले! अब मैं अपने उत्तर के दूसरे भाग 'टिकाऊ माल की लोक प्रियता' के सम्बन्ध में एक छोटी सी कहानी सुनाता हूँ। ध्यान देकर सुनो। रत्नमाला संभल कर बैठ गई और उसका चित्त भी सभा स्थल में आ पहुँचा।

गुणदत्त ने कहना आरम्भ किया देवि! एक समय अन्न देश का एक यात्री वर्षान्त में भारत देश के पंचनद प्रदेश में यात्रा के लिये आया। वह उससे पहले चीन, तिब्बत, सिंहभूमि. यवद्वीप और जापान की भी यात्रा कर चुका था। पंचनद प्रदेश की शालपुरी में वह अग्रबन्धु नामक श्रेष्ठी का अतिथि हुआ सुन्दरी तुम जानती हो, शालपुरी प्याज और लहसन के लिये हमेशा से प्रसिद्ध हैं। महाभारत युद्ध महारथी कर्ण ने राजा शल्य को अनेक कटुवचन बोलते हुये यह भी उलाहना दिया था कि तेरी शाकल नगरी के स्त्री पुरुष प्याज और लहसुन खाते हैं। अपनी दैनिक प्रथा के अनुसार सेठ अग्रबन्धु ने अनेक

स्वादिष्ट पकवानों और मेवा भोजनों के साथ अतिथि की थाली में प्याज की कतलियाँ भी रखदीं। माँसाहारी देश का बाशिन्दा होने के कारण अतिथि प्याज से परहेज करने वाला प्राणी नहीं था अतः उसने बड़े प्रेम से प्याज का आस्वाद लिया।

अतिथि को भारत में पैर रक्खे दो महीने हो गये थे। अनेक स्थानों पर उसका स्वागत सत्कार हुआ था किन्तु आज पहला अवसर था जब उसे भोज के साथ प्याज मिली थी अतः उसने बड़े प्रसन्न चित्त से अपने मिजवान (अतिथेय) से पूछा, मित्र आपके देश में तो इन दिनों प्याज मिलती ही नहीं। मैंने कई जगह स्वयं प्याज मांगी किन्तु सब जगह यही जवाब मिला कि हमारे यहां वर्षात के दिनों में प्याज नहीं मिलती। गर्मी के ऋतु के बीतते वह समाप्त करदी जाती है क्योंकि वर्षात के दिनों में सड़ जाती है फिर तुम्हारे यहाँ यह ताजा जैसी स्वादिष्ट प्याज कहाँ से आ गई अतिथि के आश्चर्य को शान्त करने के लिये सेठ अग्रबन्धु ने कहा प्रिय अतिथि यह प्याज भरत की नहीं अपितु सुदूर देश जापान की है। मैं अभी इन्हीं गर्मियों में जापान की यात्रा से लौटा हूँ वहीं से अपना यह प्रिय भोजन भी लेता आया यहाँ वंग देश में आने पर मुझे पता लगा कि वर्षात आरम्भ पर हजारों मन प्याज से लदे जापानी जहाज काली घाट पर उतरते हैं।

वंग देश में कुछ जापानी व्यापारी भी रहते हैं उनसे मुझे मालूम हुआ कि अब से बीस साल पहले जापान देश का एक व्यापारी शिष्ट-मण्डल भारत में अपने देश की बनी चीजों को खपाने की सुविधाएँ प्राप्त करने के लिये आया था। उसे मालूम हुआ कि भारत में प्याज की भी खूब खपत होती

# भाव किसके हाथ?

पांचवे दिन रत्नमाला ने सेठ गुणदत्त को सम्बोधित करते हुए पूछा, महाशय ! "वस्तुओं के भावों को घटाने बढ़ाने की कुँजी किस देश के हाथ में होती है ?' गुणदत्त सेठ ने कहा, सुभगे ! वैसे तो लोग यह कहते चले आते हैं कि "भाव और न्याव आकाश से उतरते हैं।' किन्तु जहाँ तक राष्ट्रीय व्यापार का सम्बन्ध है यह कहावत वहीं तक सच है ‡ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार क्षेत्र में तो भावों को घटाना बढ़ाना उस देश के हाथ में होता है जो मुद्रा नीति का निर-धारक होता है।' इस प्रसङ्ग में मुझे एक बात याद आती है जो हरिवर्ष (देश) के दो राज्यों से सम्बन्ध रखती है।

कहते हैं काकेशश पर्वत की रमणियां अपने सौन्दर्य के लिये बहुत मशहूर हैं। फारस देश के लोग तो उन्हें कोह-काफ की परियों के नाम से पुकारते हैं। पार्शियन स्त्रियां काफी खूबसूरत होती हैं; किन्तु पार्शियन रसिक ग्रन्थों में पारस युवकों को पागल बनाने वाली कोह काफ की सुन्दरियों को ही बताया गया है। इन काकेशश लोगों के पड़ोस में ही उजबक लोग रहते हैं। अपनी शारीरिक मजबूती के लिये उजबक समस्त हरिवर्ष देश में प्रसिद्ध हैं। इन्हीं उजबकों के

---

‡ जब आकाश बरसता है तो अन्न अधिक पैदा होने से सस्ता हो जाता है। नहीं बरसता तो महंगा होजाता है। पुरातन समय में न्याय पञ्चों द्वारा होता था। पञ्च को पर-मेश्वर कहते थे अतः वह आकाश समझा जाता था।

सरदार 'जावस्की' को काकेशश राजकुमारी 'केकवानू' के साथ शादी करने की धुन सवार हुई। जब साधारण बात-चीत से काम नहीं चला तो उज़बकों ने भेड़ों की खाल बेचने वाले व्यापारियों के वेश में काकेशिया में प्रवेश किया कुछ दिनों की कोशिशों के बाद वह केकवानू को उड़ाने में सफल होगये।

काकेशियन लोगों के लिये यह बड़े शर्म की बात थी कि कोई उनकी राजकुमारी को उड़ा ले जाय और वे शांति के साथ बैठे रहें। राजा का दरबार भरा और तमाम काकेश सरदारों ने तलवारों को ऊंचा उठाकर कसम खाई' हम उज़-बकों को मिटाकर दम लेंगे।

उज़बक लड़ाई में हार गये उन्होंने केकवान् वापिस करदी और अगली दो शताब्दियों के लिये काकेश लोगों के मातहत रहने को स्वीकार कर लिया। उज़बक राज्य काकेश साम्राज्य का एक अधीन राज्य हो गया। उस पर अपना राजनैतिक प्रभुत्व और प्रभाव बनाये रखने के लिये काकेश लोगों ने अपना क्षत्रप मुकर्रिर कर दिया।

उज़बक रमणियाँ सौन्दर्य में काकेश रमणियों से अवश्य घाटियाँ थीं किन्तु परिश्रम और गृह शिल्प में उनसे कहीं बहुत आगे थीं वे अपनी भेड़ों के ऊन को साफ सुथरा करके मुलायम बनाती। उसे रंगकर आकर्षक करती। तब उससे बटुये, चुटीले, बनियान, मोजे और गुलूबन्द तैयार करतीं। उनके मर्द पशुपालन खेती का काम करते। कुछ उनमें से कम्बल बनाते और ऊनी लबादे तैयार करते उनकी स्त्रियों और कारी-गरों की बनी चीजें काकेश के बाजारों में बड़े चाव से खरीदी जाती। कुछ ही वर्षों में काकेशश का अपार धन उजबक देश में

आ गया और उनके माल की माँग भी काकेश में बराबर बढ़ने लगी।

काकेशिया सम्राट को अपने देश में शौकीनी बढ़ने और आर्थिक ह्रास होने का बड़ा रंज रहने लगा। उसने उजबक देश के माल को अन्धाधुन्ध आने से रोकने के लिये उस पर चुँगी लगाई किन्तु इस पर भी उसका आयात कम नहीं हुआ तब उसने अपने राज्य के तमाम प्रमुख कबीलों के सरदारों को इस समस्या के हल करने के लिये आमन्त्रित किया।

राजा ने चाहा कि चुँगी की दर को और भी ऊँचा कर दिया जाय, जिससे उजबकों को को अपने माल की पूरी कीमत ही न मिले। इस पर एक सरदार ने राजा की इस तजबीज का इस दलील के साथ विरोध किया कि यह उपाय समस्या का वास्तविक हल नहीं है। इससे हमारे देश में भी हलचल मचेगी और उसका खुला आयात बन्द होकर चोरी से आना आरम्भ हो जायगा। मैं तो इस सम्बन्ध में यह मुनासिब समझता हूँ कि उसके सिक्के की कीमत गिरादी जाय आज उनकी मुद्रा हमारी मुद्रा के बराबर मूल्य की है। अब हम यह देख लें कि प्रतिवर्ष हमारे देश में कितनी कीमत का पक्का माल उनके यहाँ से आता है और कितनी कीमत का कच्चा माल वे हमारे देश से खरीदते हैं। अर्थमन्त्री ने बताया उजबक लोगों से हमारा देश प्रतिवर्ष पचास लाख मुद्रा का लेन-देन करता है। उसमें उन्हें दस लाख मुद्रा का प्रतिवर्ष मुनाफा होता है। माननीय सरदार के सुझाव के अनुसार यदि हम उजबक मुद्रा की कीमत काकेशश मुद्रा से पौन करदें तो हम ढाई लाख प्रतिवर्ष के मुनाफे में रह सकते हैं।

उजबक लोग सिर पीट कर रोने लगे जब उन्होंने सुना कि उनकी मुद्रा की कीमत काकेशश में बारह आना रह गई है।

# टिकाऊ और कलापूर्ण

शुभ्र वेश धारी रत्नमाला के सभा स्थल में पधारने पर उपस्थित जन समूह में शांति का वातावरण पैदा होगया। सेठ गुणदत्त ने भी उन लोगों से छुटकारा पाया जो अनेक प्रश्नों की झड़ी लगाकर उसे चार घड़ी से तङ्ग कर रहे थे। कोई उनसे पूछता था आपके यहां किस चीज का व्यापार है ? कोई पूछता क्या तुम्हारे पिता कोई प्रसिद्ध व्यापारी थे ? किसी किसी ने तो उनकी मां और बहिनों के नाम तक पूछने का दुस्साहस किया।

आसन ग्रहण करते हुए रत्नमाला ने पूछा श्रेष्टि कुमार "दूसरे देशों में किस देश का व्यापार घर कर लेता है ? अपने सिर के घुँघराले बालों में अंगुली डालते हुए सेठ गुणदत्त ने उत्तर दिया कुमारी ! जो देश कलापूर्ण और टिकाऊ माल तयार करता है वह किसी भी अन्य देश में अपने व्यापार के लिये स्थान बना लेता है। रत्नमाला ने कहा श्रेष्टि-कुमार मानलो मालव और आनर्त दोनों देशों में कपास पैदा होती है और इतनी पैदा होती है जो अपने अपने देश की आवश्यकताओं के लिये काफी है फिर यह कैसे संभव है कि आनर्त की कपास की मालवा में अथवा मालवा की कपास की आनर्त में खपत प्रिय बन जाय ?

सेठ गुणदत्त बोले सुभगे ! मेरे उत्तर के दो अङ्ग हैं, एक यह कि जिस देश का माल कला पूर्ण होगा वह दूसरे देश में स्थान प्राप्त कर लेगा। दूसरे यह कि माल टिकाऊ होने पर भी दूसरे देश में अपने लिए स्थान पैदा कर लेगा। पहले मैं कला की बात को लेता हूँ और इस विषय पर तुम्हें एक

वस्त्र पर कसीदा काढ़ रही थी। अपने झोंपड़े में घुसते हुए अतिथियों को देखकर वह उठी और चटाई बिछाते हुये बोली यह तो एक गरीब बुनकर की विधवा बेटी की झोंपड़ी है यदि मेरे सभ्य अतिथि इसमें रात काटना पसन्द करें तो मुझे प्रसन्नता होगी। अधिक सुख से रहने के लिये यहां हमारे चौधरी का मकान है। रानी अनङ्गप्रभा ने कहा बेटी आज की अपनी विपत्ति पूर्ण रात्री को हम तेरे इस झोंपड़े में ही काटना पसन्द करेंगे।

दूसरे दिन प्रातः जब राजा रानी चलने लगे तो उस युवती ने एक सुन्दर रूमाल जिस पर अनेक सुनहरी बेल बूटे कढ़े हुए थे रानी अनङ्गप्रभा को भेट किया। राजा रानी उस रूमाल को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

युवती के घर में अरगनी के ऊपर कुछ छपी हुई और बेल बूटों से चित्रित साड़ियां और चादरें भी लटकी हुई थीं। रानी अनङ्गप्रभा ने उनमें से एक साड़ी को स्पर्श करते हुए पूछा, बेटी इसका मूल्य क्या होगा ? युवती ने कहा, माताजी यह साड़ी चम्पक देश से दस रजत मुद्रायें सादा रूप में आई थी। इसे हमने छापा है। किनारे पर सुनहरी बेलें काढ़ी हैं। मध्य में रजत स्वर्ण मिश्रित तारों के फूल बनाये हैं। अब इस का मूल्य दस स्वर्ण मुद्रा है।

राजा सुशर्मा ने कहा, पुत्री चम्पक देश के माल से मेरा सारा काशी राज्य पटा पड़ा है। मैं बहुत दिनों से इस चिन्ता में था कि यही दशा चम्पक देशीय माल के आयात की रही तो मेरा देश उसके मुकाबिले में गरीब हो जायगा किन्तु धन्य है तुझे जो चम्पक देश के माल को कलापूर्ण बनाने का आदर्श हमारे सामने रक्खा है। हम इस कला की शिक्षा अपने राज्य

के हजारों आदमियों को देकर इस धन्धे को प्रोत्साहन देंगे और फिर इसका निर्यात बढ़ाकर अपने देश को धनी बनाने का प्रयत्न करेंगे।

युवती यह जानकर प्रसन्नता से गद्गद् होगई कि धानके पयाल पर सोकर रैन बसेरा करने वाले दम्पति अतिथि उसकी पवित्र राष्ट्रभूमि काशी के महाराज महारानी हैं।

× × × ×

थोड़े ही दिनों में बनारसी गोटे की साड़ियों की चर्चा सारे देश में फैल गई।

रत्नमाला संतुष्ट थी। किन्तु उसका चित्त इस समय सभा भवन में नहीं था अपितु घर के रजत मंजूषा में रक्खी हुई बनारसी साड़ी को देख रहा था।

गुणदत्त बोले रत्नमाले! अब मैं अपने उत्तर के दूसरे भाग 'टिकाऊ माल की लोक प्रियता' के सम्बन्ध में एक छोटी सी कहानी सुनाता हूँ। ध्यान देकर सुनो। रत्नमाला संभल कर बैठ गई और उसका चित्त भी सभा स्थल में आ पहुँचा।

गुणदत्त ने कहना आरम्भ किया देवि! एक समय अरब देश का एक यात्री वर्षान्त में भारत देश के पंचनद प्रदेश में यात्रा के लिये आया। वह उससे पहले चीन, तिब्बत, सिंहभूमि, यवद्वीप और जापान की भी यात्रा कर चुका था। पंचनद प्रदेश की शालपुरी में वह अग्रबन्धु नामक श्रेष्ठी का अतिथि हुआ सुन्दरी तुम जानती हो, शालपुरी प्याज और लहसन के लिये हमेशा से प्रसिद्ध है। महाभारत युद्ध महारथी कर्ण ने राजा शल्य को अनेक कटुवचन बोलते हुये यह भी उलाहना दिया था कि तेरी शाकल नगरी के स्त्री पुरुष प्याज और लहसुन खाते हैं। अपनी वैदिक प्रथा के अनुसार सेठ अग्रबन्धु ने अनेक

स्वादिष्ट पकवानों और मेवा भोजनों के साथ अतिथि की थाली में प्याज की कतलियाँ भी रखदीं। माँसाहारी देश का वाशिन्दा होने के कारण अतिथि प्याज से परहेज करने वाला प्राणी नहीं था अतः उसने बड़े प्रेम से प्याज का आस्वाद लिया।

अतिथि को भारत में पैर रक्खे दो महीने हो गये थे। अनेक स्थानों पर उसका स्वागत सत्कार हुआ था किन्तु आज पहला अवसर था जब उसे भोज के साथ प्याज मिली थी अतः उसने बड़े प्रसन्न चित्त से अपने मिजबान (अतिथेय) से पूछा, मित्र आपके देश में तो इन दिनों प्याज मिलती ही नहीं। मैंने कई जगह स्वयं प्याज मांगी किन्तु सब जगह यही जवाब मिला कि हमारे यहां वर्षात के दिनों में प्याज नहीं मिलती। गर्मी के ऋतु के बीतते वह समाप्त करदी जाती है क्योंकि वर्षात के दिनों में सड़ जाती है फिर तुम्हारे यहाँ यह ताजा जैसी स्वादिष्ट प्याज कहाँ से आ गई अतिथि के आश्चर्य को शान्त करने के लिये सेठ अग्रबन्धु ने कहा प्रिय अतिथि यह प्याज भरत की नहीं अपितु सुदूर देश जापान की है। मैं अभी इन्हीं गर्मियों में जापान की यात्रा से लौटा हूँ वहीं से अपना यह प्रिय भोजन भी लेता आया यहाँ वंग देश में आने पर मुझे पता लगा कि वर्षात आरम्भ पर हजारों मन प्याज से लदे जापानी जहाज काली घाट पर उतरते हैं।

वंग देश में कुछ जापानी व्यापारी भी रहते हैं उनसे मुझे मालूम हुआ कि अब से बीस साल पहले जापान देश का एक व्यापारी शिष्ट-मण्डल भारत में अपने देश की बनी चीजों को खपाने की सुविधाएँ प्राप्त करने के लिये आया था। उसे मालूम हुआ कि भारत में प्याज की भी खूब खपत होती

# सहकारिता।

साँतवें दिन सभा स्थल पर जनता की अपार भीड़ थी। ऐसा लगता था मानों सारा अवन्ति नगर उमड़ पड़ा है। आज आखिरी दिन था और आखिरी सवाल। यह यकीन तो सब किसी को हो चुका था कि रत्नमाला को गुणदत्त जीत चुका है जब वह छः प्रश्नों के सही उत्तर दे चुका है तो सातवें का न दे सके इसके लिये कोई कारण ही नहीं दीखता। आज वह बिना भाँवरे डाले भी गुणदत्त की हो जायगी।

शंख ध्वनि से जन समूह के कोलाहल को शान्त करने के बाद सभा के संयोजकों ने घोषित किया सभ्य नागरिको! हमने इस ऊँचे स्थान पर वैताल के बनाये हुये ध्वनि प्रसारक यन्त्र को लगा दिया है। उसी के सामने खड़ी होकर रत्नमाला अपने प्रश्न को प्रकट करेगी और फिर गुणदत्त सेठ उसी के सामने आकर उत्तर देंगे। महाराजा विक्रमादित्य की कृपा से हमें वे पुतलियाँ भी प्राप्त हो गई हैं जो इस संवाद को अपने में भरकर रात्रि को शहर वासियों को सुना सकेंगी।

रत्नमाला यन्त्र के सामने आई। उसने मधुर आवाज में बोला, दूर-दूर तक बैठे हुये जन समूह ने सुना—महाजनो! सेठ गुणदत्त से मैं अपने इस प्रश्न का उत्तर चाहती हूँ कि "किसी राष्ट्र के थोड़ीथोड़ी पूँजी वाले लोग भी किस भांति बड़े से बड़ा व्यवसाय कर सकते हैं। मेरा यह प्रश्न अन्तिम प्रश्न है और इसी पर मेरे और इस परदेशी वणिक पुत्र के भाग्य का फैसला है। इसलिये मैं चाहूँगी कि आप लोग शांति के साथ इनके उत्तर को सुनें।

जन समूह उत्तर सुनने की उत्कंठा से शांत था। रत्न-माला ऊँचे मंच से वापिस लौटी और गुणदत्त उधर की ओर बढ़े। मंच पर पहुँचकर उन्होंने प्रसन्न मुद्रा से कहा, मान्यवर लोगो 'किसी भी देश के छोटी २ पूँजी वाले लोग भी सहयोग समिति (Company) बनाकर बड़े से बड़ा व्यवसाय कर सकते हैं।' सहकार के सम्बन्ध में मुझे एक पुरानी ऐतिहासिक कथा याद आती है आपके मनोरंजन के लिये मैं उसे आप लोगों को सुनाना चाहता हूँ। आप ध्यान से सुनने की कृपा करें।

हरियाना के दक्षिण पश्चिम दिशा में आज से लगभग पाँचसौ वर्ष पहले अर्थात विक्रम पूर्व पांचवीं सदी में वसुमती नाम एक नगरी थी। जहाँ नाग लोगों का राज्य था और चारों ओर नागों की ही बस्तियाँ थीं। यह राज्य प्रजातांत्रिक था। राजा वसु इस जनतन्त्र के अधिनायक थे। शतद्रु, गंगा और यमुना सभी नदियां वहाँ से दूर थीं अतः वर्षा पर निर्भर रहने वाले इस प्रदेश में खेती से गुजर होना मुश्किल पड़ रहा था। सिंचाई के अभाव में इस प्रदेश में कपास भी बहुत कम होती थी। सब लोग कृषि और गौ पालन पर निर्भर थे। प्रति तीसरे वर्ष अकाल के पड़ने से इस देश की गौओं की प्राण रक्षा का प्रश्न भी लोगों के सामने था। इन सब कठिनाइयों के कारण लोग परेशान थे।

गणराज वसु का विवाह कुरु देश में हुआ था जो गंगा और यमुना के बीच का देश है। जहाँ के लोग नदियों के कांठे में गेहूँ, कपास और गन्ना पैदा करके आनन्द का जीवन बिताते थे वसु राज जब अपनी जनता के रहन-सहन के दर्जे को कुरु लोगों से मिलाते तो उन्हें शर्म सी लगती क्योंकि कुरुओं के रहने-सहने, ओढ़ने पहरने और खाने पीने का स्तर नागों से बहुत ऊँचा था।

नाग अधिपति की रानी सुलेखा से अपने पति का उदास और चिन्तित रहना देखा नहीं जाता था इसलिये उसने एक दिन अपने पति से कहा, प्रियतम जब आपका देश उपजाऊ नहीं है। खेती में वह पिछड़ा हुआ है तो उसे बजाय खेतिहर देश के औद्योगिक और व्यवसायिक बनाने की क्यों न कोशिश की जाय। वसुराज ने अपनी प्रियतमा के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, रानी ! मेरा देश गरीब है। उद्योग और व्यवसाय चलते हैं धन से, अतः पहले धन का साधन बताओ तब व्यापार की बात करना। रानी सुलेखा ने राजा वसु के हाथ को अपने हाथ में लेकर और उनकी अंगुलियों को सहलाते हुये हंसकर कहा प्रियतम मेल मिलाप से थोड़ी थोड़ी पूँजी से भी व्यवसाय किया जा सकता है। मैं तो देखती हूँ सहकारिता के साथ काम करने वाली मधु मक्खियाँ केवल परिश्रम से ही काफी मधु संचय कर देती हैं। बहुत सोचने के बाद आपकी प्रजा को मालामाल बनाने का एक ही उपाय मेरी समझ में आया है और वह है 'सहकारिता' आप अपने राज्य के समझदार लोगों से थोड़ी-थोड़ी पूँजी से एक सहयोग व्यवसाय समिति की स्थापना कराइये। यही व्यापार समिति व्यवसाय और उद्योगों का आपके सारे जनपद में कार्य करेगी और सुदूर देशों के माल को इधर से उधर पहुँचायेगी। यदि और कुछ नहीं तो आप 'यातायात साधन' संस्था का ही सहकार पद्धति से प्रबन्ध करदें तो कुरु देश के माल को सारस्वत देश में और सारस्वत देश के माल को कुरु देश में पहुँचा कर बहुत सा धन कमाया जा सकता है। आपके देश के जैसे मजबूत बैल दूसरे देशों में नहीं होते। ऊँट भी आपके यहाँ बहुत हैं। सैकड़ों हजारों ऊँटों की 'यातायात समिति' बहुत पैसा कमासकती है।

राजा वसु के दिमाग में रानी सुलेखा के सुझाव घर कर गये। उन्होंने अपनी प्रजा के लोगों की एक सभा बुलाई और थोड़ी थोड़ी पूंजी लगाकर व्यवसायिक व औद्योगिक समितियां बनाने का प्रस्ताव उन्होंने जनता के सामने रक्खा। आरम्भ में सत्ताईस भागीदार खड़े हुये जिन्होंने नौ सौ स्वर्ण मुद्रा देकर एक 'व्यवसाय एवं उद्योग श्रेणी' की स्थापना की। राजा वसु इस संस्था के अगुवा (प्रमुख) बने अतः लोग उन्हें महाराज वसु के बजाय अग्रश्रेण के नाम से पुकारने लगे और आगे चल कर उनकी यह प्रिय संस्था जो नाग क्षत्रियों ने व्यवसाय और उद्योग के लिये कायम की थी। 'अग्रश्रेणी' के नाम से प्रसिद्ध हुई। अग्रश्रेणियों ने 'सहकार पद्धति' से न केवल नाग देश में अपितु वृज, कुरु और शूरसेन देशों में भी अपना प्रभाव बढ़ा लिया उसका व्यवसायिक ढंग लोगों को इतना पसन्द आया कि मय राष्ट्र के बारह व्यवसायियों ने मिलकर द्वादश श्रेणी नाम की एक सहकार समिति की स्थापना और की जो पांचाल और कान्यकुब्ज देशों में अपना व्यापार चलाती थी।

समय बीत गया। वर्षों गुजर गये किन्तु 'सहकार आन्दोलन' के जन्मदाता राजा अग्रश्रेण (अग्रसेन) को लोग आज तक याद करते हैं।

सभा में चारों ओर से आवाज आई। राजा अग्रसेन की जय! 'सहकार धन्दे अमर हों!'

प्रबन्धकों ने फिर शङ्ख घोष किया। जन समूह शांत हुआ। तब पुनः गुणदत्त ने कहना आरम्भ किया—

आवन्तेय बन्धुओ!

अब रत्नमाला मेरी है। मैंने उसे जीता नहीं प्राप्त किया है। आप से यदि मैं कहूँ कि मैं एक व्यापारी का बेटा हूँ और

व्यापार ही मेरा धन्दा है तो आप मेरे इस व्यङ्ग से प्रसन्न ही देखें कि मैंने अवन्ति नगरी से जो वार्तिक (व्यवसाय) किया है उसमें मुझे एक विचित्र धन मिला है। महानुभावों स्त्री भी एक धन है। (सभा में हर्ष ध्वनी) लेकिन हाँ। यह धन धन है। पदार्थ नहीं। इसलिये इसका क्रय विक्रय नहीं होता। यह चल शम्पत्ति होते हुए भी अविभाज्य और अपरिवर्तनीय है। और अगर मैं यह कहूँ कि यह धन भूमि धन से भी प्रिय है तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। मैं चाहता हूँ कि मालवे की यह वस्तु मेरे लिये उर्वरा सिद्ध हो। गुणदत्त के इस व्यङ्ग वाक्य से सभा में चारों ओर हँसी फूट पड़ी।

इतने में लोगों ने देखा। रत्नमाला एक पुष्प हार लिये मञ्च की ओर आरही है। उसने मञ्च पर आकर गुणदत्त के गले में हार डाला और दोनों हाथ जोड़ कर उपस्थित जन-समूह को सम्बोधित करते हुए कहा, आप सेठ गुणदत्त से कहें कि वही मालव भूमि में ही रहें और अपने उपजाऊ दिमाग से इस भूमि की अभिवृद्धि का कारण बनें। मेरे पिता के कोई पुत्र नहीं है उनकी यही इच्छा है और महाराजा विक्रमादित्य भी ऐसे गुणी आदमी को अपने राज्य में बसना पसन्द करते हैं।

दूसरे दिन नगर में सुना गया कि गुणदत्त ने अपनी शादी की खुशी में उन तमाम वणिक पुत्रों को मुक्त कर दिया है जो रत्नमाला के प्रश्नों का सही उत्तर न देने के कारण बन्दी बनाए गये थे।



## हुन्डी

जूनागढ़ के सेठ मानक भाई की एकलौती पुत्री शोभा बेन काठियावाड़ में अद्वितीय सुन्दरी समझी जाती थी। बड़े बाप की बेटी, तिस पर अतुल सौन्दर्य, फिर उसका विवाह किसी कुबेर के पुत्र से पक्का न होता तो यही एक अचम्भे की बात होती। भीमपत्तन के सेठ जीवाभाई के पुत्र कांता भाई के साथ उसका सम्बन्ध तय हुआ। कांता जहाँ खूबसूरती में दूसरा कन्दर्प था वहां उसका पिता सेठ जीवाजी धन दौलत में भूतल का कुबेर था।

एक धनवान की पुत्री का धनवान के पुत्र के साथ जब विवाह हो तो उसकी जिस शान के साथ तैयारियां होती हैं उसका अन्दाज भी वही लोग लगा सकते हैं जो स्वयम् धनी हैं और जिन्हें धनियों की शादियां देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। कहते हैं, दहेज में देने के लिये जो वस्त्र और आभूषण सेठ मानक भाई ने तय्यार कराये थे उन्हें देख कर एक मजूर स्त्री का दिमाग फेल होगया था। वर्षों तक वह सड़कों और गलियों में चिल्लाती फिरती रही "मैं वह कर्ण फूल पहनूंगी जिनमें बिजली सात रङ्ग होकर चमकती है। मुझे वह हार चाहिये जिससे छाती पर दीपमाला सी जग उठती है। मैं उस चूनरी को सिर्फ एक बार सिर पर रखना चाहती हूँ जिसके नीले रङ्ग पर तारा-मण्डल जगमगाता है। मुझे उन जूतियों को सिर्फ एक घण्टे को पहना दो जो बीर-बधूटी की पीठ से भी नर्म है और जिनमें जुगनू चमकते हैं।"

जगह दी। सन्त नरसी अपने अपमान का कारण समझ गया उसे महसूस हुआ कि उसकी बहिन संत नरसी की गाहक नहीं वह मेहता नरसी को चाहती है।

सन्ध्या हुई। आस पास के मन्दिरों में घण्टे बजने की आवाज आने लगी। सन्त नरसी ने हाथ मुँह धोये और शङ्ख संभाला। साथ के सन्तों ने घड़ियाल और झञ्झरी संभाले आरती होती रही। जाने कितनी देर,यह नरसी भगत को कुछ भी पता नहीं रहा। वह शङ्ख अवश्य बजा रहा था किन्तु उसका मन कहीं और जगह था। शङ्ख बजाते बजाते उसे ध्यान आया कि उसकी मञ्जूषा में कुछ हुँडियां भी तो पड़ी हैं उनमें से कोई शायद इसी जूनागढ़ के सेठ की हो।

घर बार छोड़ते समय भूल से कुछ हुँडियां नरसी मेहता के संदूक में चली आईं थीं वह उन्हें फेंक भी न सका था। उसका इरादा था जब कभी मौका मिलेगा इन्हें पटाकर भगवत्सेवा में लगा दिया जायगा। कपूरबत्ती के प्रकाश में उसने हुँडियों को पढ़ना शुरू किया। उनमें एक सेठ सामल-शाह की लिखी हुई भी थी। नरसी भगत उसी समय जूनागढ़ नगर की ओर चल दिये। सेठ सामलशाह ने उन अतुल राशि वाली हुंडी को पटा दिया और भात का सामान खरीदने में भी मदद की।

× × × ×

दूसरे दिन सुना गया कि नरसी की हुंडी का सामल-शाह ने इतना रुपया चुकाया जिससे सारे गुजरात में कुछ ही मोहर होगई। नरसी का भात अपूर्व रहा। और ऐसा रहा जैसा कोई भविष्य में भी नहीं दे सकेगा।

साथी संत लोग आनन्द में डूब गये। क्योंकि नरसी ने

पूछा भाई तुम्हें इतना धन किसने दे दिया ? नरसी ने कहा
प्रभु के भक्तो ! यह मेरी हुँडी थी जिसे सामलशाह ने अदा
किया है। मुँह विचका कर एक वैरागी ने पूछा नरसी हुँडी
क्या बला है ? जिससे रुपये मिल जाते हैं। हंसी से लोटपोट
होते हुए नरसी ने कहा, भाई आप लोग जन्म के संत हैं
इसलिए हुँडी का मर्म नहीं जानते । मैं एक वणिक पुत्र हूँ अत
हुन्डी से बखूबी परिचित हूँ। यह एक 'साख पत्र' है जो व्यव
सायी लोग आपस में लिखकर एक दूसरे से माल या रुप
उधार ले लेते हैं। व्यापार को इस प्रथा से बड़ी सहायता मि
है। कुछ अवसर ऐसे होते हैं जब बड़े से बड़े महाज
के पास एक भी रुपया नहीं होता है। ऐसे समय वह हुन्डी लि
कर अपनी आवश्यकता को पूरा कर लेते हैं।



को भी सीखा। विलायत में तमाम बातें ही अच्छी नहीं थी। लन्दन के नृत्यगृहों में उसने अर्धनग्न होकर नाचते हुये भी गौरांगमहिलाओं को देखा था किन्तु इस प्रकार की किसी भी बात को उसने श्रेयष्कर नहीं समझा। उसने तो वहाँ के अर्थ ज्ञान और राजनीतिक ज्ञान की ओर विशेष ध्यान दिया।

जब वह भारत लौटी तो अधिक स्वस्थ थी। मां ने लपक कर उसके सिर को चूम लिया। और पीठ पर हाथ फेरते हुये बोली क्योंरी ! कमला तू बालिस्टर होकर भी मेम न हो सकी, यहाँ तो सब लोग कह रहे थे कमला अब पूरी मेम बन जायगी। कमला अपने माँ के भोलेपन पर हँस पड़ी। उसने जरा हँसते हुये कहा अम्मा विलायत की सारी मेमें भी तो बैरिस्टर नहो है। मेम और बैरिस्टर कोई एक ही चीज तो नहीं।

बैरिस्टर कमला की बहुत बड़ी आमदनी थी। नित ही नोटों के बंडल उसके घर में आते थे किन्तु हर सातवें दिन कमला उन्हें घर से ले जाती थी और फिर वापिस न करती थी। कई महीने तक यही क्रम चलता रहा। बुड्ढी मां के चित्त में अनेक विकल्प उठते थे कभी वह सोचती शायद कमला इस रुपये को किसी दान पुण्य के काम में लगा देती है। कभी सोचती किसी को उधार दे देती है। कभी कभी कुछ बुरा ख्याल भी उसके दिल में आ जाता किन्तु वह ठहरता नहीं।

एक दिन कमला के भाई विमलशंकर को दस हजार रुपये की आवश्यकता पड़ी। शहर के बाहर गंगा किनारे एक सुन्दर कोठी बिक रही थी। तीस हजार में उसका सौदा हुआ था। विमलशंकर के पास बीस हजार रुपये तो थे। दस हजार की कमी थी। उन्होंने कमला से दस हजार रुपये माँगे। माँ सोच

सा रुपया शुगर मिल और ग्लास वर्क्स फैक्टरियों में लगा हुआ है। इस वर्ष वह 'पूर्वी भारत वायुयान कम्पनी' के पचास लाख के हिस्से खरीद रही है। इसके अलावा दैनिक आमदनी के भी पचासों कारवार बैंकें करती हैं। मानलो मैं एक लाख रुपये का माल कलकत्ते से मंगा लूं। मेरे पास रुपये क. कमी हो तो मैं बैंक को उस ी बिलटी देकर माल बैंक के नाम छुडवा सकती हूँ बैंक इस समय चौथाई तिहाई रुपया मेरे पास से लेकर शेष रुपया अपने पास से बिल्टी छुडाने में दे देगा। एक तय की हुई मियाद के अन्दर मैं बैंक का रुपया अदा करके अपने माल को ले लूँगी। इतने दिनों का वह मुझसे व्याज ले लेगी। इस प्रकार बैंक से मेरा भी काम निकल गया और बैंक का भी धन्दा होगया।

मां, इन बैंकों से व्यापार को बड़ा प्रोत्साहन मिला है। विलायत में बैंकों का जाल बिछा हुआ है। इंगलैंड देश के अनेकों बैंकों की शाखायें जर्मनी, यूनान, इटली, अफ्रीका, अमे- और कनेड़ा तक फली हुई हैं। इनमें इंगलेण्ड और स्थानीय मुल्कों का अरबों रुपया लगा हुआ है। इसी प्रकार जर्मनी, इटली, अमेरिका आदि की भी बैंक इङ्गलेण्ड और दूसरे मुल्कों में फैली हुई हैं।

बैंकों के कारवार से रुपये का माध्यम ( बिचौलिया ) चैक है। मान लो मुझे लाहौर से कोई माल खरीदना है। वहां के व्यापारी को मैं नकद रुपये देने के बजाय बैंक का चैक दे सकती हूँ यदि लाहौर में 'गङ्गाभारत' बैंक की शाखा हुई तो व्यापारी वहां से रुपया ले लेगा और वहां शाखा नहीं हुई तो वह दूसरे बैंक को दे देगा। वह दूसरा बैङ्क इलाहाबाद (गङ्गा भारत बैङ्क) से रुपया मंगा लेगा। इस परिश्रम के बदले में वह कुछ आने पैसे और चाहेगा।

व्यापार और उद्योग धन्दों की अभिवृद्धि के लिये प्रत्येक देश के लिये बैंकों की आवश्यकता है। इस महत्व को अभी हमारे देश ने कम समझा है। इसीलिये यहां बैंकों की भी कमी है और बैंकों की कमी से व्यापार भी दूसरे देशों की भांति समुन्नत नहीं है।

हमारे देश में सब से पहले महकमा पोस्ट आफिस ने अपने यहां बचत धरोहर बैंक खोली थी। इसके बाद भारत सरकार ने शाही बैंक (इम्पीरियल बैंक) की स्थापना की। अब तो देश में हजारों बैंकें खुल गई हैं। कुछ सहयोगी बैंक भी कायम हुई हैं। अभी मुल्क के लिये हर धन्दे की बैंकों की आवश्यकता है। देहाती इमदाद का काम करने वाली बैंकों का तो अभाव सा ही है।

मां, सुनते सुनते ऊकता चुकी थी और उसके दिमाग में एक प्रश्न भी चक्कर काट रहा था अतः उसने कमला के मुंह पर हाथ रखते हुए कहा, और क्योंरी कमला ये बैंक वाले बेईमानी कर जांय तब? कमला ने कहा, मां, ठीक कहती हो, लेकिन बैंक बेईमानी कर नहीं सकती। किसी भी देश की बैंकें वहां के सरकारी कानूनों के नियन्त्रण में चलती हैं। मां, सारा संसार राजदण्ड से कांपता है और वह राजदण्ड जनता के उस धन की रक्षा करने में बड़ा कठोर है जो बैंक के अन्दर लगा हुआ है।

# व्यक्तिगत योग्यता

हमारे मित्र अजयकुमार वर्मा जब जर्मनी से लौटे तो उन्होंने आते ही हमारी मथुरापुरी की 'जीवन प्रवाह कम्पनी' के प्रोप्राइटर से साक्षात करने की इच्छा प्रकट की। हम लोग प्रायः नित ही सुखपाल शर्मा से मिलते रहते थे और उनकी 'जीवन प्रवाह कम्पनी' में भी आते जाते रहते थे इतने पर भी हम उनके प्रति इतने आकर्षित कभी नहीं हुये जितने कि हमारे मित्र अजयकुमार वर्मा जिन्होंने कि सुखपालजी को एक बार भी नहीं देखा था। हमने पूछा क्या आपको उनके यहाँ से कोई दवा खरीदनी है उन्होंने जवाब दिया, 'दवा नहीं खरीदनी किन्तु कुछ सीखना है। धत्तरे की जब सुखपालशर्मा से ही सीखना था तो जर्मनी में कामर्स ( व्यापार ) की शिक्षा पाने के लिये जाने की क्या जरूरत थी ?" उलाहने के तौर पर हमने कहा, अजयकुमार हँस पड़े और बोले तुम यही तो नहीं जानते कि किताबी ज्ञान के अलावा भी बहुत कुछ सीखने को रह जाता है और वह है उस सम्बन्ध का क्रियात्मक अनुभव। तुम पं० सुखपाल शर्मा की सम्पत्ति को जानते हो उसके स्थूल शरीर को पहचानते हो किन्तु उनकी उस व्यक्तिगत योग्यता के बारे में कतई अजान हो, जिसके बल पर कि वह एक गरीब आदमी से लखपति सेठ बने हैं और जिसके कारण उनका नाम भारत से बाहर तक फैला हुआ है। क्या तुम्हें मालूम है ?

जर्मनी के बाजारों में उनका 'बाल जीवन' उन्हीं भाँति चाव से खरीदा जाता है जिस भाँति हिन्दुस्तान में 'कारनीनल' या 'वाय लाइफ' खरीदे जाते हैं। हमने व्यङ्ग के तौर पर कहा, वर्माजी ! हम तो सुखपालशर्मा को उस रूप में जानते हैं जो उसका आज से तीस साल पहले था जबकि वह बाजार में दही पकौड़ी बेचा करता था 'और मैं उन सुखपालजी को जानता हूँ जो वह आज हैं और जिनसे आज हजारों युवकों को प्रोत्साहन मिलता है, । बस यही तुम्हारे और मेरे समझने का अन्तर है,, । अजयकुमार ने कहा ।

बातों ही बातों में दस बज चुके थे बहूजी का सन्देश आया स्नानागार में गर्म जल पहुँच चुका है, आप लोग जल्दी नहा लीजिये ताकि गर्म-गर्म भोजन पा सको ।

चूँकि हमें अपने दफ्तर जाना था । इसलिये हमने कल्लूआ को कह दिया कि जब बाबू अजयकुमार चाहें वह उन्हें "जीवन प्रवाह कम्पनी" में ले जाय ।

शाम को घर आने पर मालूम हुआ कि अजयकुमार अपनी भाभी को लेकर सिनेमा देखने चले गये हैं। सिनेमा भी क्या बला है ? इसमें प्राय लोग अकेले जाना पसन्द नहीं करते, उन्हें साथी की तलाश रहती है और साथी अगर कोई महिला मिल जाय तो फिर क्या कहना । सिनेमा का आनन्द ही चौगुना हो जाता है । हमें भी जब युवा थे सिनेमा देखने का बड़ा शौक था । अब उम्र के साथ ही शिथिल होता जाता है अजयकुमार जवान हैं सिनेमा भी जवानी की उमंगों का प्रतिबिम्ब है । वैसे उसमें समाज, राजनीति और इतिहास सब कुछ होता है किन्तु यदि जवानी का दृश्य भाग उसमें से निकल जाय तो देखने वालों का एकदम अभाव हो जाय और

यह व्यवसाय भी कतई चौपट हो जाय। इस प्रकार जवानी का क्रय-विक्रय ही नहीं; प्रदर्शन भी एक व्यापार है। हम इसी उधेड़बुन में पलंग पर करवटें बदल रहे थे कि गयरह का घण्टा बजा और उसी के साथ मकान के सदर दरवाजे पर किवाड़ खोलो की आवाज आई। कलुआ ने जाकर किवाड़ खोले श्रीमती जी ने कमरे में प्रवेश करते करते पूछा कुछ खाया पिया भी कि यों ही सो रहे? हमने कहा, सोना तो जवानी के साथ गया अब तो लेटना भर रह गया है। मुँह से रूमाल हटाते हुए श्रीमतीजी ने कहा, "जवानी के साथ आपका तो सोने का मजा ही गया अपना तो तमाशा देखने का भी मजा चला गया,,। तुम्हारे साथ उन दिनों जो मजा सिनेमा देखने में आता था वह अब लाला अजयकुमार के साथ नहीं आया। आज तो सिनेमा की वे दो घड़ी तो अच्छी लगी हैं जिनमें चैतन्य महाप्रभु "हरे कृष्ण हरे कृष्ण" का कीर्तन करते हुए पर्दे पर आये थे। अभी श्रीमती जी का कथन प्रावह बन्द नहीं हुआ था कि अजय कुमार भी आगये और बोले भाभी मैं तुम्हें वहाँ ढूंढ रहा था। जाने तुम किधर से निकल आईं? श्रीमतीजी ने हँस कर जवाब दिया "जब लाला हरिणियों की आंखों को पढ़ रहे थे तब यह डोंडिया बूढी भैंस। इधर निकल पड़ी"। रिस्ता उम्र को नहीं देखता। श्रीमतीजी चालीस को पार कर चुकी थीं अजय अभी चौबीस साल के युवक थे पर बात चीत भाभी से जो चल रही थी उस का क्या लेना देना मुस्कराकर बोले 'भइयाजी के बड़े भाग' हैं जो भैंस के मालिक हैं। दूध पियें और मौज करें। हमारे हिस्से में हरिणी हैं जिनके पीछे छलांगे भरते फिरें। फिरभी हाथ आये न आये।

प्रसङ्ग को बदलने के लिए हमने कहा, अजय, तुम

सिनेमा व्यवसाय ही क्यों नहीं कर लेते। फिल्म कम्पनी खड़ी करो तो लाख दो लाख रुपये हम भी लगा सकते हैं। अजय ने कोट की कालर को ठीक करते हुए कहा, भाई साहब, मेरी दृष्टि में सिनेमा व्यवसाय नहीं, । एक 'नवाविष्कृत धन्दा' अवश्य है। अजय का यह जवाब हमारी समझमें ठीक तरह से नहीं आया इसलिए हमने पूछा, भाई व्यवसाय और धंधे में क्या अन्तर है। अजय बोला श्रीमानजी जङ्गल से लकड़ी ला कर बेचना, लकड़ी काटना, धन्धे हैं और जङ्गल लगाना, पेड़ों को उन्नत करना, उन्हें मूल्यवान बनाना और उनसे लाभ उठाना "व्यवसाय" है। जिस कारबार में उत्पादन शामिल नहीं है उसे मैं व्यवसाय कहने के लिए तय्यार नहीं हूं। मेरी निगाह में अन्न पैदा करना व्यवसाय है। मिट्टी के बर्तन बनाना व्यवसाय हैं। औषधियां तय्यार करना व्यवसाय है। बाग बगीचे लगाना व्यवसाय है। कच्चे माल को पक्का बनाना व्यवसाय है। पशु पालन और डेयरी व्यवसाय है किन्तु जौलाहे के यहां से अथवा मिल से कपड़ा मंगा कर बेचना व्यवसाय नहीं एक दलाली है या कमीशन एजन्सी है। फिल्मों का धन्दा राष्ट्र का मनोरंजन कर सकता है उसके प्रवाह को भी बदल सकता है किन्तु उसका पोषण नहीं कर सकता। मैं उसी धन्धे को व्यवसाय कहने के लिये तय्यार हूँ जो राष्ट्र का पोषण भी करता हो। इसका अर्थ यह नहीं है कि फिल्म निर्माण और प्रदर्शन को मैं अनावश्यक समझता हूं बल्कि असल बात यह है कि मेरी रुचि उत्पादनमय व्यवसाय की ओर है। मैं किसी ऐसे ही व्यवसाय में अपनी शक्ति लगाना चाहता हूँ, उसी में आपका धन लगाने की भी सलाह दूंगा।

जर्मनी व्यापारिक ज्ञान प्राप्त करने बाद में इसी उद्देश्य से

अपने देश के छोटे मोटे किन्तु कुशल व्यवसाइयों से मिल जुल रहा हूँ। हमें याद आया, आज अजयकुमार सुखपाल शर्मा से भी तो मिले होंगे। इसलिए हमने पूछा, हां, हां, अजय हमारी नगरी के व्यवसायी की मुलाकात का हाल सुनाओ। अजय बोला, आपके सुखपाल शर्मा की व्यवसायिक आत्मकथा को सुन कर तो उस नाई की बुद्धिमानी की कथा याद आ जाती है जो राजा विक्रमादित्य की सेवा में रहने के कारण उन्हीं की भांति चौदह विद्या निधान हो गया था। शर्माजी ने बताया "आरम्भ में मैं एक वैद्यजी के यहां दवा कूटने पर नौकर हुआ। वहां मैंने औषधि निर्माण के साथ जिन बातों पर ध्यान दिया उनमें मुख्य यह थीं। (१) ग्राहकों की रुचि। (२) अपनी चीजों का प्रोपेगण्डा। (३) वस्तुओं की बाह्य सुन्दरता पर ध्यान। (४) थोक माल पर यथेष्ट कमीशन (५) पर्याप्त उत्पादन (६) सतर्कता और (७) सुप्रबन्ध। मैंने देखा ग्राहक ऐसी दवा चाहते थे जो हजार रोगों के लिये एक ही काफी हो। जड़ी बूटियों में यह गुण है कि वे अलग अलग अनुपानों के साथ कई कई रोग की औषधि बन जाती हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर मैंने 'प्राण सुधा' का आविष्कार किया। इसको एक बतासे के साथ लेने से जी मिचलाना बन्द हो जाता है। अदरक के रस के साथ लेने से खाँसी दूर होजाती है। हरड़ के साथ खाने से पेट दर्द दूर होजाता है। कुछ तो इस औषधि में मिश्रण ऐसी जड़ियों का है जो अलग अलग दस बारह रोगों की दवा हैं और उन्हें किसी रोग में दिये जाने पर नुकसान नहीं होता। दूसरे अनुपान जो मैंने नियत किये हैं वे स्वयम् उन रोगों की औषधि हैं। इस प्रकार हर रोग के लिये मेरी 'प्राण सुधा' चल निकली है। हालांकि वह उत्तम दर्जे की और

अचूक औषधि एक भी सर्व की नहीं है किन्तु साधारण तौर पर अनेकों रोगों में लाभ पहुँचाती है और वास्तव में लोगों की रुचि ही यह है कि एक ही दवा से अनेक रोगों का निवारण हो; इसलिये मेरी 'प्राण सुधा' की काफ़ी खपत है। जितने पैसे की वह दवा है उससे भी अधिक पैसे उसे मैं बाहरी तौर से खूबसूरत बनाने में लगाता हूँ, पंचरंगा लेबिल सुन्दर बक्स। यह सिर्फ इसलिये कि हर मनुष्य सौन्दर्य पसन्द है। गुण से पहले लोग सुन्दरता को देखते हैं। मैंने अपनी दवाइयों का प्रोपेगन्डा करने में दिल खोलकर खर्च किया है। मैं जानता हूँ कि हमारे पास अच्छे से अच्छा माल है इसे हम जानें या हमारे पड़ोसी किन्तु दुनिया तो तभी जानेगी जब उसकी तारीफ उस तक पहुँचेगी। प्रत्येक शहर और देहात तक मैंने अपनी दवाओं की गुणगाथा अखबारों, नोटिसों और दीवाल-लेखों से पहुँचाई है। मैं यह कह सकता हूँ जितना माल दुकान या कारखाने से बिकता है उससे कई गुना हमारे एजेन्ट बेचते हैं और वह हमारे रिश्तेदार या मित्र नहीं हैं न हमसे उन्हें कोई खास मुहब्बत है किन्तु वह यथेष्ट कमीशन पाते हैं और साथ ही हम उनका भी विज्ञापन करते हैं अतः वह लाभ और नाम दोनों दृष्टियों से हमारा माल स्वेच्छा और उत्साह से बेचते हैं। माल के उत्पादन की कमी हम कभी नहीं होने देते। खपत से ज्यादा माल हर समय हमारे पास तैयार रहता है। जिससे हम आर्डर देने वालों की इच्छा की तुरन्त पूर्ति करते हैं। इस बात का हम सदा ध्यान रखते हैं कि औषधि निर्माण, लेबिल और बक्स के सौन्दर्य में कोई गलती और कमी न होने पावे। कोई ग्राहक असंतुष्ट न हो जाय। माल की तैयारी और खपत तथा काम करने वालों की देख-रेख और

हिसाब का हमारी ओर से निहायत अच्छा प्रबन्ध रहता है। यही हमारी 'जीवन प्रवाह' कम्पनी की सफलता का हेतु है।''

'एक मजदूर भी अपनी व्यक्तिगत योग्यता से थोड़ी भी पूँजी लगाकर एक अच्छा व्यवसायी बन सकता है,,। यह शिक्षा मुझे पं० सुखपालशर्मा से मिली''। अजयकुमार ने बड़े उत्साह से कहा' हीरे की पहचान जौहरी ही करता है इन शब्दों में हमने भी सुखपाल शर्मा और अजयकुमार वर्मा दोनों की तारीफ करदी।

श्रीमतीजी अभी तक सोई नहीं थीं हमारी बातों को वह दिलचस्पी के साथ सुन रहीं थीं, बोलीं नौकरी चाहे कितनी बड़ी हो पैसा तो व्यापार से ही जुड़ता है। अजय ने कहा किन्तु भाभीजी सफल व्यापारी ही पैसा कमा सकता हैं और सफल व्यापारी होने के लिये व्यक्तिगत योग्यताओं की आवश्यकता पड़ती है।



वसन्त ऋतु की बात है। रानी सुपर्णा दरबार में बैठी हुईं थीं। उनकी परिचारिकाओं के सिवा मन्त्री लोगों की स्त्रियां भी थीं। आज का दरबार मानो स्त्रियों का दरबार था क्योंकि वहां पुरुष कोई न था। चरखा प्रतियोग्यता चल रही थी। सभी मिलकर चर्खे पर एक गीत गा रही थीं। "वाहीक देश हमें बहुत प्यारा है। वह भारत मां का प्यारा पुत्र है। मां उसे प्यार करती है क्योंकि वह कमाकर खाने वाला देश है। नदियां उसकी जीवन हैं। वह स्वस्थ है। मन उसका पवित्र है। कोई भी आदमी मांग कर न खाये, ठाला न रहे, बेईमानी न करे, एक दूसरे को ऊँच नीच न समझे, यह उसका प्यारा मन्त्र है।"

मधुर लहरी के साथ चरखे की भौं, भौं, ध्वनि में लय मिला कर सब गा रहीं थीं। हाथ की पौनी का तार और स्वर तन्त्री बिना किसी उतार चढ़ाव के समान गति से साथ दे रही थीं कि इसी समय एक युवक ने दरबार में प्रवेश किया। गीत बन्द हुआ। एक युवती ने पूछा, हे युवक तुम कौन हो? युवक ने उत्तर दिया मैं "सारस्वत गुरुकुल का स्नातक ब्रह्मदत्त ब्राह्मण हूँ।" रानी सुपर्णा से कुछ अभ्यर्थना करने आया हूँ। आप में महारानी कौनसी है? सो मुझे बताने का कष्ट करो रानी सुपर्णा स्वयम् बोल पड़ी। ब्रह्मदत्त, मैं रानी सुपर्णा हूँ। अपने आने का अभिप्राय मुझ से कहो; युवक ने कहा, राज महिषी, मैं आप से अपने जीवन निर्वाह के लिये कुछ वृत्ति चाहता हूँ। युवक इसके बदले में आप देश को क्या देंगे? रानी सुपर्णा ने पूछा सखियां भी उत्तर सुनने को संभल कर बैठीं 'महादेवी! मैं आपके देश को आशीर्वाद दूंगा।' ब्राह्मण युवक ने जवाब दिया। 'ब्रह्मदेव! सिर्फ आशीर्वाद से ही तो

काम नहीं चलता। तुमने आयुर्वेद पढ़ा होगा। क्या तुम्हारे बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल का दायित्व अपने ऊपर लेने को तैयार हो ?,, रानी सुपर्ण ने सरल भाव से पूछा। ब्राह्मण युवक बोला, राजरानी ! मेरी रुचि आयुर्वेद की ओर नहीं रही अतः मैं आपकी आज्ञा का पालन करने में असमर्थ हूँ। हाँ, व्याकरण पर मेरा अधिकार है। रानी ने फिर पूछा, शिल्प वास्तुविद्या, चित्रकला और पाक विज्ञान इनमें से भी स्नातक यदि तुम कुछ जानते हो तो हम तुम्हारे लिये भरसक सहायता करने को तैयार हैं। केवल व्याकरण से पेट की समस्या हल नहीं होती। ब्रह्मदेव का चेहरा बराबर लाल होता जा रहा था। व्याकरण की इस प्रकार की कोई अवज्ञा कर सकता है यह उसे स्वप्न में भी विश्वास न था। कुछ कठोर स्वर में उसने कहा, राज्ञीश्वरी, जिस देश के लोग व्याकरण नहीं जानते हैं। वे शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते और न वे भाषा का मर्म ही जान सकते हैं। तुम तनिक भी व्याकरण के महत्व को जाने होती तो ऐसी बातें नहीं करतीं। रानी सुपर्णी समझ रही थीं कि ब्राह्मण नाराज हो रहा है किन्तु उन्होंने अपनी वाणी को और भी मीठी करके कहा, नहीं भाई ! व्याकरण की अवज्ञा नहीं करती। तुम में और मुझ में व्याकरण के महत्व के बारे में इतना अन्तर है, तुम उसे जीवन निर्वाह के धन्धों की विद्या से अधिक महत्व देते हो और मैं कम। तुम्हारे लिये वह पूर्ण है, मेरे लिये उपकार।

शिक्षा के बारे में मेरा अपना दृष्टिकोण यह है कि जिस कला के सीखने से हमें कृषि, व्यवसाय उद्योग धन्धों की वृद्धि करने की जानकारी प्राप्त होगी और जो धर्म की उन्नति का साधन है वही विद्या सीखने के लिये उपयोगी है। कोई बालक

तुम नहीं जानते हो। पशुपालना तुम्हें आता नहीं। स्वास्थ्य के बारे में तुम्हारी रुचि नहीं शिल्प और कला से तुम अनभिज्ञ हो तब तुम्हारा ज्ञान जीवनोपयोगी ज्ञान नहीं कहा जा सकता। व्याकरण के उत्कट जानकार होने के नाते तुम्हें लोग पंडित अवश्य कह सकते हैं किन्तु देश को पहली आवश्यकता तो कृषिकार, गोपाल और कारीगरों की है। पंडित तो बाद की चीज है। युवक के माथे पर बल पड़ रहे थे वह बिना उत्तर दिये अपने सारस्वत देश में वापिस लौट आया कुछ ही दिन बाद उसने देश भरके पंडितों की एक सभा बुलाई और रानी सुवर्णा के साथ हुई तमाम बातें उस सभा में रक्खीं। पंडितों ने एक मत से व्यवस्था दी। वाहीक देश में किसी भी ब्राह्मण को नहीं जाना चाहिये। वह मलेच्छ देश है। वहाँ की रानी व्याकरण के महत्व को नहीं समझती है।,,

नाथ अबतक मुझे मलेच्छ देश की उस रानी से नफ़रत थी किन्तु कल जब महात्मा गाँधी ने उसी शिक्षा को उपयोगी बताया जो देश के आर्थिक स्तर को ऊँची करती है तो अब मुझे मलेच्छ देश की रानी से प्रेम हो गया है और चाहती हूँ कि दयाकृष्ण साहित्य के साथ ही जीवन निर्वाह के साधनों की भी शिक्षा प्राप्त करे।

———

# धन उपार्जन के कुछ निकृष्ट तरीके

मौलवी हबीबुर्रहमान साहब कलकत्ता जाने की तैयारी में थे कि उनकी खालाजान बीबी सकीना ने पूछा बेटे कल-कत्ते किस लिये जा रहे हो? "मेरे पास कुरआने हमीद की नसीहतों को लोगों तक पहुँचाने के सिवा दूसरा धन्धा ही क्या है? यही मैं कलकत्ते जाकर करूँगा।" मौलवी साहब ने बुढ़िया को जवाब दिया। बुढ़िया ने तस्बीह के दानों को फेरते हुये कहा, मेरे प्यारे बेटे अल्लाह तुम्हें बनाये रक्खे। लेकिन क्या तुम अपने उन चारों भाइयों को कोई नसीहत नहीं दे सकते, जो तुम्हारी इसी खालाजान से पैदा हुये हैं और जिन का धन्धा, जुआ खेलना खिलाना, शराब बेचना बनाना, चोरी करना कराना और सट्टा बट्टा है। सात सौ मील दूर कलकत्ते के लोगों को तो तुम्हें सुधारने की फिक्र है लेकिन अपने ही घर के लोग इस तरह के बने रहें जिन्हें दोजख भी लेने से शर-मावे। मौलवी साहब को बुढ़िया की बातें चुभ गईं। वे मन ही मन कहने लगे सच तो कहती हैं 'दिया तले का अंधेरा' भी तो दूर होना ही चाहिये। इस प्रकार काफी सोच विचार के बाद बोले मौसी मैं अपने भाइयों को अगर नहीं सुधार सका तो मेरा जीना व्यर्थ है। बाहर नौकर बैठा है उससे कहदो [illegible] ताँगा लेने को हैरान न हो, आज मैं कलकत्ता नहीं जा रहा।

शाम को मौलवी साहब अपने जुआरी भाई के पास पहुँचे उससे कहा, भाई जान, आज तुम्हें मेरे साथ [illegible] तक चलना है। जल्दी तैयार हो जाओ। जुआरी भाई ने कहा तैयार

होने को कौनसा साज बाज पहनना है ? ( सिर पर हाथरस्ती टोपी रखते हुये ) लो तैयार हो गया।

शहर में बिजली की बत्तियां जल चुकी थीं किन्तु कब्रिस्तान में अभी तक बिजली लगाने का प्रस्ताव तक म्यूनिसिपलटी में नहीं आया था। एक मकबरे में एक दीपक टिमटिमा रहा था। दीवाल के सहारे टाट का आसन लगाये एक बुड्ढा तस्बीह फेर रहा था। बोरी के टुकड़ों का उसके शरीर पर अँगरखा था और टीन का एक तसला और गिलास उसके बासन बर्तन थे। मौलवी साहब 'अस्सला-मालुकम' कहकर उसके सामने बैठ गये। 'मालुकम-सलाम' कहकर बुड्ढे ने मौलवी साहब के अभिवादन का जवाब दिया और भइया हबीब; तुम आज यहाँ कैसे ? कहकर वह रो पड़ा मौलवी साहब ने उसे धीरज देते हुये कहा, आगरा शहर के मशहूर मारूफ, सौदागर सुल्तान अहमद खान मैं अपने सौतेरे भाई को आपकी उन कुटेवों के नतीजे सुनाने के लिए अपने साथ लाया हूँ जिनकी वजह से आप लखपती से आज खाकपती बन गये हैं। मुमकिनहै आपकी जीवन कथा सुनकर मेरा यह जूआरी भाई सुधर जाय।

बुड्ढे सुल्तान अहमद ने अपने को संभाला और मैल से भरे अंगूठे के नाखून को दांत के नीचे दबाते हुए बोला, भइया हबी ! यह तो बताने की जरूरत ही नहीं कि मैं एक दिन आगरे के बड़े धन पतियों में गिना जाता था यहां की म्यूनिस्पलटी का तीन बार चेयरमैन रहा। जौन्स मिल में मेरा हिस्सा था और जूते के आधे कारखाने मेरी पूंजी पर जीवित थे। आज मूंज का फट टाट मेरा बिछौना है बोरी के चिथड़ों से सिला यह टुकड़ा मेरा चादरा है। कमिश्नर और गवर्नर

तो सात साल की सजा हुई किन्तु पुलिस अदालत सभी ने 'सुल्तान अहमद' नाम का इतना लिहाज किया कि मैं बच गया।

उसके बाद मैं जुआरियों के चक्कर में पड़ा। आज कुछ बचाता था कल उसे गँवा देता था इस प्रकार पाँच वर्ष इस धन्दे में बीत गये। एक दिन पकड़ा गया और तीन साल के लिये जेल भेज दिया गया। दो सप्ताह पहिले ही जेल से लौटा हूँ। भइया हबीब! यह अच्छा ही हुआ। पाप का दण्ड मिलना ही चाहिए। इन जुए के पांच सालों में मैंने अनेकों घरों को बर्बाद किया था। स्त्रियों के जेवर लाकर जुआ खेलने वाले मेरे पास आये। बच्चों को गिरवी रखने वालों ने पौबारह के लालच में काने तीन मेरे पास पाये। हरे हुए तंग जुआरियों को लेकर चोरियां मैंने की और कराईं जिनमें बच्चों का चीत्कार और स्त्रियों का हाहाकार साधारण सी घटनायें थीं।

अब जब जेल से छूट कर आया तो हालत यह है कि मैं जिधर जाता हूँ उधर ही फटकार मिलती है कोई पास नहीं बैठने देता है। किराये का मकान जब लाख कोशिश करने पर भी नहीं मिलता तो इस कब्रस्तान में जहां मुर्दों का बसेरा होना चाहिए यह जिन्दा सुलतान अहमद रैन बसेरा करता है। इतना कहकर बुड्ढा रो पड़ा। मौलवी हबीबुर्रहमान ने उसके आंसू पोंछते हुए उसे धीरज बंधाया और पूछा क्या सचमुच सुलतान अहमद तुम्हें अपने कर्मों पर पछतावा है? जुआ, सट्टा और शराब खाने को वाकई तुम निकृष्ट धंधा समझते हो? बुड्ढे ने हिलकियां भरते हुए कहा, दादा मौलवी मैं कुरान शरीफ की कसम खाकर कहता हूँ मैं इन धन्दों को शैतानी धन्धे समझता हूँ। मौलवी साहब का जुआरी भाई जो

बुड्ढे की बातों को बड़े ध्यान से सुनता था, वह रो पड़ा और मौलवी साहब के पैरों को पकड़ कर बोला, भाई जान! तुमने खतरे से पहले मेरी आंखें खोलदी हैं। मैं जिन्दगी भर तुम्हारा अहसान न भूलूंगा। मेरे लिये खुदावन्द करीम से दुआ करो कि वह मेरे अपराधों को माफ करदें।

'दादा सुल्तान कहीं चले न जाना। अगले जुम्मा की की नमाज तुम मेरे यहां ही पढ़ोगे, इतना कहकर मौलवी हबीबुर्रहमान अपने जुआरी भाई के साथ घर को लौट पड़े। मकबरे का दीपक बुझ चुका था इसलिये बुड्ढा बोरी ओढ़ कर टाट पर लेट गया।

जुम्मे के दिन:—

जौहरी बाजार में चमड़े के एक कारखाने का उद्घाटन हो रहा था। यू० पी० के माल मिनिष्टर से उद्घाटन की रस्म अदा कराई जारही थी। शहर के सभी मशहूर व्यापारी और हाकिम हुक्काम मौजूद थे। जिला कलक्टर ऐकिन्स साहब और शहर कोतवाल सरदार बेतावसिंह भी तशरीफ रख रहे थे। टेबुलों पर सब के सामने चाय और चाय के साथ शीरदान और नमकदान थे। तश्तरियों में मेवा और फल भी परोसे जा रहे थे। तभी मौलवी हबीबुर्रहमान साहब ने खड़े होकर कहा, लायक महमानो! आज जिस कम्पनी का उद्घाटन करने हमारे वजीर तशरीफ लाये हैं उसका नाम 'हबीब-ब्रादर्स एन्ड फ्रेन्डस कम्पनी' होगा। इसके मैनेजिंग डाइरेक्टर होंगे शेख सुल्तान अहमद जो इस समय नशेबाज, जुआरी और गुण्डा न मालूम किन किन नामों से मशहूर थे किन्तु अब उन्हें अपने गुनाहों पर सचमुच अफसोस है। उन्हीं की जैसी आदतों पर चल रहे थे मेरे मौसेरे भाई, उन्होंने भी

इन कर्मों से तौबाह कहली है। श्रोता लोगों के कान खड़े हो गये। आपस में एक दूसरे के साथ फुसफुसाने लगे। मौलवी साहब ने आगे कहा, बिरादराने वतन! आप चाहें जो कुछ सोचें मैंने इन लोगों को अल्लाह की राह पर खड़ा कर दिया है।

उत्सव समाप्त हो गया। कोतवाल साहब ने अपने गुप्तचरों को कम्पनी के काम की देख-भाल का आदेश दे दिया क्योंकि उनकी निगाह से यह गुण्डों का कारबार था।

अगले पाँच वर्ष बाद:—

लोगों ने सुना, शेख सुल्तान अहमद मर गये हैं। उन्होंने अपनी पूँजी की वसीयत बदचलन लोगों, खासकर जुआरी; चोर और सट्टेबाजों को धंधे खोलने के लिये कर दी है। उनकी इस रकम की तादाद सत्ताईस लाख रुपया है।

सुनने वालों में से अनेकों ने कहा आखिर शेख सुलतान अहमद एक सुलझा हुआ व्यापारी था तभी तो उसने पाँच वर्ष में हबीब कम्पनी को ढाई करोड़ के मुनाफे में कर दिया।



सच है कि स्वर्ग बिना दान पुण्य के नहीं मिलता। मैंने कहा, इसका सही जवाब तो स्वर्ग से वापिस आने वाले ही दे सकते हैं किन्तु इतना मैं जानता हूँ कि 'धन के उपयोग' के श्रेष्ठ मार्ग दो हैं। दान और भोग। इनके अलावा तीसरा मार्ग है है दुर्व्यसनों में खर्च होना अथवा चोरी चला जाना। इसे नष्ट होना कहते हैं। भोग के अर्थ हैं। अपने स्वास्थ्य और बल की वृद्धि के लिए खान पान और रहन सहन पर खर्च करना तथा व्यापार और कृषि पर वृद्धि हेतु लगाते रहना। दान के अर्थ हैं जहां उसके देने से अधिकाधिक प्राणियों को लाभ पहुँचता हो। अग्निहोत्र, विद्या प्रचार, राष्ट्रोन्नति के अन्य कामों पर लगाना उत्तम दान है। इस विषय पर मुझे अमेरिका के के उस धनी की बातें याद आती हैं जो अपने नौकरों की तनख्वाह में से उन दियासलाइयों की कीमत भी काट लेता था जो वह दीपक जलाते समय एक ज्यादा अपनी गलती से जला देते थे। उन दिनों तीन पाई में सत्तर पक्की दियासलाई आती थीं। वह एक एक दियासलाई का हिसाब रखता था लोग उस मितव्ययी को कृपण के नाम से याद करने लगे थे। अमेरिका में वह कई करोड़ की संपत्ति का मालिक था जो लोग नकशा देखते रहते हैं वे जानते रहते हैं कि उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के बीच में एक कटिप्रदेश है। बहुत ही पतला भूभाग। एक समय अमेरिका के प्रसिद्ध व्यापारियों ने सोचा इस प्रदेश को पूर्वी पश्चिमी समुद्रों से मिलने के लिये एक नहर खोद दी जाय तो अमेरिका के व्यापार में भारी तरक्की हो जाय। क्योंकि पूर्वी देशों से माल लाने वाले जहाजों को अमेरिका के पश्चिमी नगरों को पहुँचाने के लिये हजारों मील का चक्कर खाना पड़ता है। बीच में नहर बन जाने से

महीनों का रास्ता चन्द दिनों का रह जायगा। समस्त देश में चन्दा किया गया। चन्दा कमेटी के मेम्बर हिक्सन करके उस धनपति के पास भी पहुँचे और उन्होंने उनके सामने चन्दे की फहरिस्त को रखते हुए कहा आप भी इसमें कुछ देने की कृपा करें। उस धनाधीश ने जिसे लोग कृपण के नाम से पुकारते थे फहरिस्त देखते ही कहा, मैं समझता हूँ इस नहर के निकलने से अवश्य ही मेरे देश का भारी आर्थिक लाभ होगा। अतः मैं उतने धन देने को इस काम में तयार हूँ जितना आप अब तक समस्त देश के व्यापारियों से ले चुके हैं इतना मेरे से लेलें यह चैक बुक आपके सामने है। समस्त लोग जो चन्दा मांगने आये थे आनन्द विभोर हो गये। और सारे देश में उस अमेरिकन व्यापारी की गुण गाथा गाये जाने लगी।

मेरी स्त्री का भी चित्त प्रसन्न होगया और बोली: धन बूंद बूंद से ही जुड़ता है। उसे यत्न से सञ्चय करना ही बुद्धिमानी है और देते समय अवश्य यह सोचना चाहिए कि इससे लोक कल्याण हो रहा है। आलस्य, प्रमाद और बेकारी बढ़ाने वाले लोगों को दिया हुआ दान वास्तव में धन का सदुपयोग नहीं।



# आर्थिक विषमता

सवाल निर्मला की शादी का था। उसने डाक्टरी पास की थी। इसलिए उसे और उसके अभिभावुकों को यह चिन्ता तो थी नहीं कि वर किसी धनिक का पुत्र हो। निर्मला भी कहती थी कि मैं उसीको अपना जीवन साथी बनाऊँगी जो दुनियां में फैली हुई आर्थिक विषमता को मिटाने का सही तरीका बताने में समर्थ होगा और जो समता पैदा करने के लिये अपने जीवन की बाजी लगा देने को भी प्रस्तुत होगा।

निर्मला जितनी विद्वान थी उससे अधिक वह स्वस्थ और सुन्दर थी। वह शहर में पैदा हुई थी। किन्तु देहात की मजबूती और शहर की खूबसूरती दोनों ही उसे प्राप्त थीं।

अनेक अर्थशास्त्री उसके पास आये और उन्होंने 'आर्थिक समतावाद' पर उससे बातें कीं। पण्डित निरञ्जन-देव शर्मा जो भारतीय समाज व्यवस्था के भक्त थे-ने निर्मला से कहा, इस दुनियां में यह सवाल लाखों बार पैदा हुआ है प्रयत्न भी हुए हैं किन्तु देवीजी, सारी दुनियां एकसी कभी नहीं हुई। पुराणों की कथा तुमने सुनी होगी। सञ्जय नामक राजा ने सभी लोगों को समान होने की भगवान शङ्कर से प्रार्थना की और जब सब लोग समान हो गये तो दुनिया का सारा कारबार बन्द होगया। कोई किसी का काम नहीं करे। मजदूरों के अभाव से यातायात, कृषि और वाणिज्य सब का चौपट होने लगा, तब सञ्जय ने पहले जैसी व्यवस्था के लिए भगवान शङ्कर से वर मांगा। इसलिए मैं कहता हूँ

आर्थिक समता करने की कल्पना स्वप्न है। निर्मला ने उन्हें यह कहकर टकरा दिया तुम्हारा भी एक ख्याल है और वह ऐसा ख्याल है जिसे हजारों मर्द जाहिर करते आये हैं। मिस्टर देव चिढ़कर चले गये और फिर कभी निर्मला के पास शादी की इच्छा से नहीं फटके।

वर्षों तक इंगलैंड में अर्थ शास्त्र का अध्ययन करके लौटे हुये मिस्टर अशोक फड़के भी निर्मला के पास पहुंचे और अर्थ शास्त्र के अनेक पहलुओं पर विवेचनात्मक प्रकाश डालते हुए कहने लगे मिस निर्मला, मैंने रशिया का साम्यवाद, जर्मनी नाजीवाद, इटली, का फासिस्टवाद नजदीक से देखे और पढ़े हैं अपने अपने देश में इन तीनों राजनीति मिश्रित आर्थिक-आन्दोलनों ने जनता के रहन सहन और खान पान के ढंगों को ऊँचा भी किया है किन्तु मैं इनमें से एक का भी समर्थक नहीं। मैं तो यूरोप के एक पुराने राजा लाइकरगस की नीति को पसन्द करता हूँ। जब उसके देश में आर्थिक विषमता निकृष्टतम दर्जे को पहुँच गई तो उसने स्वर्ण और चांदी के तमाम सिक्कों का चलन बन्द कर दिया और लोहे के सिक्के चला दिये। किसान और मजदूरों के पास हंसिये, हथौड़े, फावड़े, कुदाल आदि जितने लोहे के बेकार और फालतू औजार पड़े थे। उन्होंने टकसाल में भेज दिये और उनके बदले में सिक्के ले लिये। इस प्रकार उसने आर्थिक विषमता पर एक गहरी चोट की और जब देखा कि लोहे के बदले में धनियों के यहाँ से तमाम फालतू सोना चाँदी निकल चुका है तो लोहे के सिक्कों का चलन बन्द कर दिया। मि० फड़के अभी और कुछ कहना चाहते थे कि निर्मला ने कहा, डियर इकोनोमिस्ट! लेकिन ऐसा एक ही बार तो हो सकता है। बार बार तो नहीं। गवर्नमेंट को भी तो [illegible]

साख कायम रखनी पड़ती है यदि उसकी मुद्रा नीति की स्थिरता पर विश्वास न हो तो व्यापारी वर्ग उत्साह हीन हो जायगा और राष्ट्र का आर्थिक ह्रास हो जायगा। मि० फड़के निर्मला को सिर्फ दवा दारू का डाक्टर समझते थे उन्हें पता न था कि निर्मला देवी अर्थ-विज्ञान की भी सर्जरी कर सकती हैं। वे विना कोई प्रत्युत्तर दिये ही निर्मला के पास से उठ खड़े हुए।

एक दिन कामरेड के० सी० जोशी भी निर्मला देवी के पास पहुँचे। उन्होंने कहा, 'उत्पादन और वितरण सम्बन्धी वर्तमान काल की व्यवस्था का सही हल नई दुनियां के विधाता कार्लमाक्स ही निकालने में सफल हुए हैं। उसका क्रियात्मक उदाहरण आप सोवियत रशिया में देख सकती हैं। वहां से आर्थिक विषमता को उखाड़ कर फेंक दिया गया है। वहां प्रथम महायुद्ध से पहले जमीन के मालिक चन्द बड़े बड़े जमींदार थे किसान उनका आसामी था। कारखाने के मालिक बड़े बड़े पूंजीपति थे मजदूर उनका मुहताज था। आज जमीन और कारखाने राष्ट्र के हैं और राष्ट्र किसान मजदूरों का है। उत्पादन और वितरण की व्यवस्था वहां अब चन्द व्यक्तियों के हाथ में नहीं अपितु राष्ट्र के हाथ में है। वहां अब कोई भूखा नहीं। नङ्गा नहीं। बच्चों की पढ़ाई का, उन्हें पोषण योग्य पदार्थ मुहिया करने का जिम्मा राष्ट्र के ऊपर है। आज वहां नई संतति में से एक भी आदमी निरक्षर नहीं। गर्भवती स्त्रियां और नाबालिग बच्चे धन्धे से वन्चित हैं। उनके लिये खाना सरकार देती है। वहां प्रसूति गृह हैं। भोजनालय हैं। आमोदगृह और वाटिकाएँ हैं, यह सब राष्ट्र की ओर से हैं। किसी भी आदमी को वहां अपने पेट भरने, बालकों को पालने और शिक्षित बनाने तथा स्त्रियों के जीवन निर्वाह की

चिंता नहीं करनी पड़ती। यह सब काम सरकार ने अपने ऊपर ले लिये हैं। व्यक्ति तो वहां परिश्रम करने भर का जिम्मेदार है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता व शक्ति के अनुसार काम करना पड़ता है। फिर वह निश्चिन्त है। परिश्रम भी वहां तेली के बैल की भांति नहीं करना पड़ता।

जो रशिया में है। उसी की स्थापना के लिये सारे संसार के श्रमजीवी लोग प्रयत्न कर रहे हैं। यही कामरेड निर्मला तुम्हें भी करना चाहिए। तभी आपके देश की आर्थिक विषमता दूर होगी।

निर्मला देवी ने कामरेड जोशी को अधिक बोलने के कष्ट से बचाने के लिए कहा, श्रीमान जी मैं आपके मार्क्सवाद का खूब अध्ययन कर चुकी हूँ। दुनियां के अब तक के प्रयत्नों में वह एक सर्वोत्कृष्ट प्रयत्न है किन्तु आपके रशिया में जो उसकी क्रियात्मक झांकी है यदि वही निरन्तर रही तो थोड़े बाद वहां आदमी और मशीन में सिर्फ भाषा और खुराक का अन्तर रह जायगा। मां का ममत्व, स्त्री, पुरुष का एक दूसरे पर प्राणोत्सर्ग की भावना, भाई का स्नेह, मित्र की आत्मीयता वहां से सब विदा हो जायेगी। रशिया की आर्थिक समता मानवता के लिये तो बहुत मंहगी है। व्यक्तियों के [illegible] के बाद परिवार बना था। विकसित परिवारों ने समाज को को जन्म दिया। समाज की मर्यादायें जब उच्छृंखल लोगों द्वारा भङ्ग की जाने लगीं तब समाज ने राष्ट्र को जन्म दिया। मिष्टर जोशी मैं उसी देश को राष्ट्र कहने के लिए तय्यार [illegible] जिसमें व्यक्ति, परिवार और समाज सब अपने आप में [illegible] के साथ जीवित हों। आपके रशिया में [illegible] के परिवार [illegible] हो चुका है। व्यक्ति है किन्तु उसका व्यक्तित्व [illegible]

वहां कुछ दिनों बाद अच्छा लुहार, तेज बुनने वाला बुनकर और सही निशाना लगाने वाला सैनिक ऊँचे और सम्माननीय व्यक्ति समझे जायगे। चरित्र की ऊँचाई का पैमाना धीरे धीरे इस देश से गायब हो जायगा। आपका साम्यवाद जोशी महाशय इतना मंहगा है जिसे आध्यात्मवादी देश बड़ी कठिनाई से अपनायेंगे। एक शब्द में यह भी कह सकती हूँ कि "रशिया का साम्यवाद रसहीन समतावाद है" तो कोई अत्युक्ति न होगी।

जोशीजी को लगा मेरा ज्ञान किताबी है। मैं दिमागी लड़ाई में पार पा सकता हूँ किन्तु निर्मला की आत्मा बोलती है। वह आदर्श के साथ ही वास्तविकता को भी देखती है। यह सोचकर वे चुप हो गये और खड़े होते हुये बोले अच्छा फुरसत के समय फिर मिलूँगा और आपके तर्कों का उत्तर भी दूंगा

सफेद खादी के कुर्ता, धोती और टोपी पहने हुये हरि भाई किंकर ने भी एक दिन निर्मला का द्वार जा खटखटाया। निर्मला देवी बाहर निकलीं और वाटिका में बिछी बेंच के एक सिरे पर बैठकर उन्होंने अजमेर काँग्रेस कमेटी के मन्त्री जी की बातों को भी सुना। उन्होंने कहा, गाँधीवादी अर्थशास्त्र के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि यन्त्रों का जहाँ तक हो कम से कम उपयोग किया जाय। घरेलू धन्धों को तरजीह दी जाय। चर्खे को सम्पत्ति उपार्जन का एक आध्यात्मिक साधन मान लिया जाय। मिल मालिक और जमींदार अपने लिये मालिक के स्थान पर अपने को ट्रस्टी समझें। जितना भी हो सके सम्पत्ति के केन्द्रीयकरण को रोका जाय। बस आर्थिक समता पैदा करने का यही मुख्य साधन है। निर्मला देवी ने कहा, आप हमारे जिले के नेता हैं। मैं आपका आदर करती हूँ।

गाँधीवाद की ओर मेरी रुचि है। उनके सर्वोदय, विकेन्द्रीकरण अहिन्सा, सत्य और अपरिग्रह के सिद्धान्तों को मिलाकर जो गाँधीवाद बनता है उसका मैं नजदीक से अध्ययन करती हूँ। किन्तु आज के युग में मशीन का एकदम बहिष्कार राजनैतिक दृष्टि से संभव नहीं। एक बार संसार में टिकने के लिये भारत को विज्ञान के सभी आविष्कारों को अपनाना पड़ेगा। संभव है गाँधीवादी स्वयं इस समस्या का कोई हल निकालेंगे और तभी आर्थिक गाँधीवाद पूर्ण समझा जायगा। मैं उत्सुकता से उस दिन की बाट देखती हूँ।

किंकर भाई को लगा। निर्मला आर्थिक गाँधवाद को उनसे कहीं ज्यादा समझती है। अतः अपने को उनसे कुछ लघु समझने के खयाल से उन्होंने विवाद को आगे नहीं बढ़ाया और 'वन्दे मातरम' कहकर विदा हो आये।

शिशर ऋतु बीत रही थी कि एक दिन सुना गया निर्मला देवी का विवाह वसंत पंचमी के दिन गोरखनाथ के साथ होना तय हो गया है। आस पास के बड़े २ अर्थ शास्त्रियों के साथ हम भी निर्मला देवी के विवाह को देखने पहुँचे। फूल मालाओं से भरे गले महाशय गोरखनाथजी निर्मला का हाथ पकड़े हुये एक छोटे से पंडाल के नीचे पधारे। सुश्री निर्मलादेवी ने उनका परिचय कराते हुये कहा आप सज्जनपुर के भक्त फूल-सिंह जी के सुपुत्र हैं आपके यहाँ खेती का धन्धा होता है। गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण आपकी शिक्षा वकील बैरिस्टर या डाक्टर बनने लायक नहीं हुई। किन्तु संस्कृत हिन्दी और अँग्रजी का अच्छा ज्ञान आपने प्राप्त किया है। आप एक अध्ययनशील व्यक्ति हैं अपने हाथ से गौ सेवा और कृषि कर्म करते हुये भी आप अर्थशास्त्र और राजनीति के पंडित हैं।

आपने भारत की आर्थिक पुनर्व्यवस्था पर एक सुन्दर पठनीय पुस्तक लिखी है आपके ख्याल से यातायात के बड़े २ साधन यथा रेल तार जहाज युद्ध सामिग्री का उत्पादन करने वाले कारखाने और समस्त खानें राष्ट्र की होनी चाहिये। मिलों में श्रम करने वाले और पूंजी लगाने वालों का साझा होना चहिये।

समस्त उत्पादनों को गाहकों तक पहुँचाने के लिये सहकारी दुकानों का प्रबन्ध होना चाहिये। इन सहकारी दुकानों में अनिवार्य तौर से प्रत्येक नागरिक का हिस्सा होना चाहिये। मतलब यह है कि उत्पादक और भोक्ता के बीच में क्रेता विक्रेता (दलालों) का जो दल होता है। वह खत्म हो जाय और उत्पादक और भोक्ता ही अप्रत्यक्ष तरीके पर उन वस्तुओं के मुनाफे के हिस्सेदार हो जावें।

गाँवों का पुनः आर्थिक निर्माण किया जावे। गाँवों की भूमि व्यक्तियों की न रहकर गाँव की सम्पत्ति करार दीजाय। प्रत्येक गाँव को पूर्ण गाँव बनाया जाय। पूर्ण गाँव वह समझा जायगा, जिसमें तैलकार, लुहार, चर्मकार, शिलपकार कुम्भकार बुनकर, किसान, माली, नाई, ग्वाले, धोबी, आदि सभी प्रकार के श्रमी और कारीगर रहते हों। जिसमें सिंचाई, पढ़ाई, खेल कूद और पंचायत के साधन उपलब्ध हों। जिसके रास्ते चौड़े और सम हों जिनका सम्बन्ध नगर से हो।

खाने पीने और रहने सहने के लिये आवश्यक सभी पदार्थों की खरीद फरोख्त के प्रत्येक गाँव में सहकारी दुकानें और गोदाम होने चाहियें।

इस व्यवस्था से आर्थिक वैषम्य दानव का रूप नहीं ले सकता। और यही एक व्यवस्था है। जिसमें 'गाँधीवादी और समाजवादी' आर्थिक व्यवस्थाओं का समन्वय भी है। बात पते की थी इसलिये हम सब खुश थे।

---